राम जिज्ञासा

जनवरी 2019

एक मनोदशा

राम-चरित सन्देश

मर्यादा पुरुषोत्तम राम

राम से इकतरफा संवाद

नाथ कहिअ हम केहि मग जाहीं

असीम प्रेम और दया के उदधि: श्री राम

संक्षिप्त रामचरितमानस-१००८ पंक्तियों में

मानस के अरण्यकाण्ड में भक्ति का सन्दर्भ

रामचरितमानस के सन्देश की विश्वजनीनता

हनुमान जी की सफलता का प्रतीक: सुन्दरकाण्ड

रामायण एक काल्पनिक ग्रन्थ या एक वास्तविकता

बुंदेलखंड में रामकथा की व्याप्ति के पुरातात्विक साक्ष्य

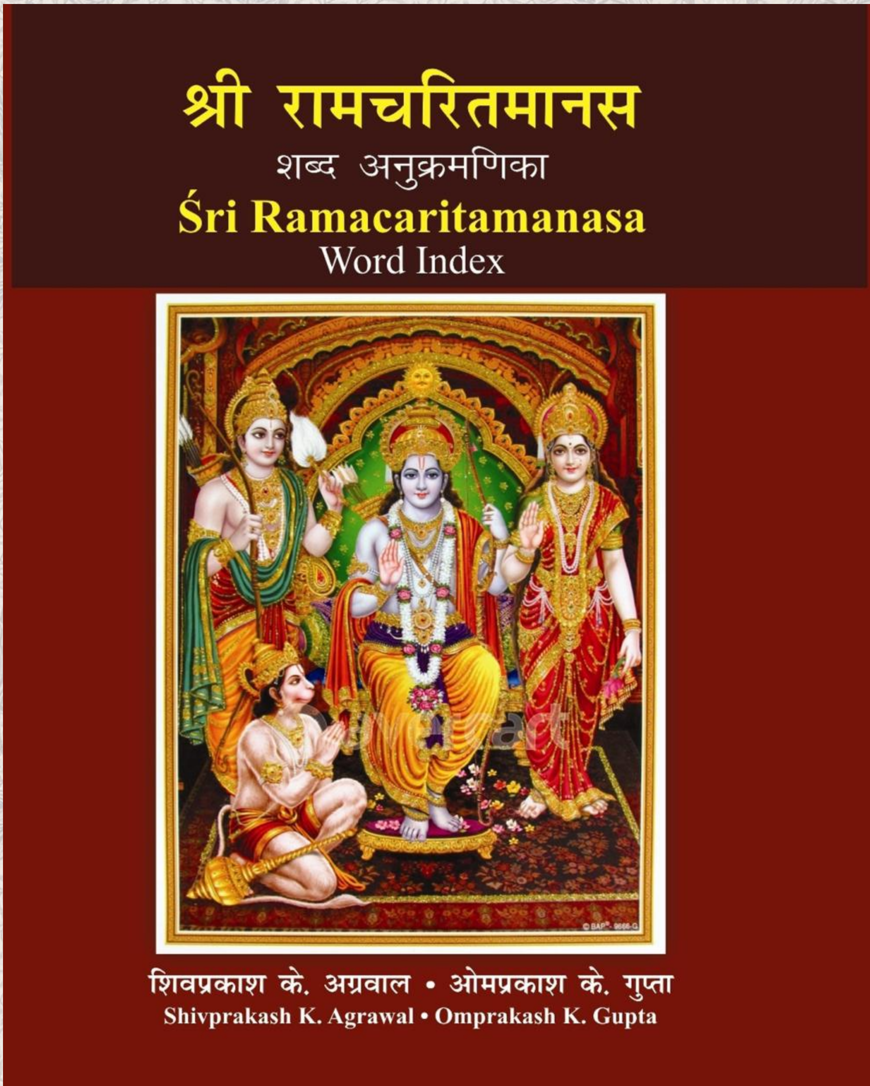

यह ४४५ पृष्ठों की पुस्तक श्री रामचरितमानस से समस्त शब्दों की अनुक्रमाणिका है । यदि आप इसे खरीदना चाहते हैं तो कृपया Om@ramacharit.org पर लिखें। मूल्य 825 रु. (भारत में) और US $30 (भारत के बाहर), डाक खर्च इसमें सम्मिलित है। आय का उपयोग 'राम जिज्ञासा' के प्रचार प्रसार के लिए किया जाएगा।

॥ जय सिया राम ॥

हरि अनंत हरि कथा अनंता। कहिं सुनहिं बहुबिधि सब संता। (मानस 1.140. C5)
भगवान अनंत है, उनकी कथाएँ अनंत हैं। संत गण उन्हें अनेक प्रकार से कहते-सुनते हैं।

२०१७ जुलाई में गोस्वामी तुलसीदास जी के ५२०वें जन्मदिवस पर ह्यूस्टन अमेरिका स्थित श्री राम चरित भवन ने अंग्रेजी में 'रामक्वेस्ट' नाम से एक पत्रिका प्रारंभ की थी। रामक्वेस्ट का एक मात्र उद्देश्य रामायण और भगवान राम के पवित्र कामों की, विशेष रूप से हमारे युवाओं के बीच, जागरूकता फैलाना है। जहां तक हम जानते हैं, रामक्वेस्ट एकमात्र पत्रिका है जो विशेष रूप से भगवान राम पर है। कई पाठकों का यह सुझाव आया कि इसका हिंदी में भी प्रकाशन होना चाहिए, फलस्वरूप 'राम जिज्ञासा' का जन्म हुआ। श्री राम की अनंत कृपा के प्रसाद में हम आपके हाथों में राम जिज्ञासा' का प्रथम अंक रख रहे हैं।

अनेक दिव्य आत्माओं के प्रोत्साहन और समर्थन के बिना 'राम जिज्ञासा' का प्रकाशन संभव नहीं था, मैं उन सबका का बड़ा ऋणी हुआ। मैं उन लेखकों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने प्रथम अंक के लिए अपनी रचनाएँ भेजी, और जो भविष्य में भेजते रहेंगे। हमारे संरक्षक और विज्ञापनदाताओं का विशेष आभार जो इस पत्रिका के व्यापक वितरण में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। अंत में, मैं अपने साकेतवासी माता-पिता और सभी गुरुओं के चरण कमलों को सादर प्रणाम करता हूँ जिनके बिना मेरे जीवन में कुछ भी संभव नहीं होता। पत्रिका की विषय में आपके विचारों की प्रतीक्षा रहेगी। जय सिया राम।

सादर,
ओमप्रकाश क. गुप्ता

जनवरी 2019 वर्ष 1 अंक 1

मर्यादा पुरुषोत्तम राम **8**
के एस भारद्वाज

रामायण एक काल्पनिक ग्रन्थ या एक वास्तविकता **10**
सुनीता काम्बोज

बुंदेलखंड में रामकथा की व्याप्ति के पुरातात्विक साक्ष्य **14**
हरिविष्णु अवस्थी

असीम प्रेम और दया के उदधि: श्री राम **17**
ज्योत्सना सिंह राजावत

मानस के अरण्यकाण्ड में भक्ति का सन्दर्भ **21**
नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम'

श्री रामचरितमानस शब्द ज्ञान **24**
ओमप्रकाश गुप्ता

नाथ कहिअ हम केहि मग जाहीं **25**
रामलक्ष्मण गुप्त

राम-चरित सन्देश **28**
मंगलेश मुजमेर 'मंगल'

राम से इकतरफा संवाद **29**
वन्दना गुप्ता

एक मनोदशा **31**
प्रतिभा सक्सेना

हनुमान जी की सफलता का प्रतीकः सुन्दरकाण्ड **32**
सरोज गुप्ता

रामचरित मानस के सन्देश की विश्वजनीनता **35**
प्रभुदयाल मिश्र

संक्षिप्त रामचरितमानस- १००८ पंक्तियों में **38**
ओमप्रकाश गुप्ता

उद्देश्य

संपादक - मंडल

प्रधान संपादक

ओमप्रकाश क. गुप्ता

कार्यकारी संपादक

शिवप्रकाश अग्रवाल

संपादकीय परामर्श मंडल

सीताराम अग्रवाल

रामलक्ष्मण गुप्त

प्रभु दयाल मिश्र

रामदास लेम्ब

राम जिज्ञासा एक त्रैमासिक पत्रिका है जिसका एक मात्र उद्देश्य रामायण के सन्देश और भगवान राम के पवित्र कामों की, विशेष रूप से हमारे युवाओं के बीच, जागरूकता फैलाना है। रचना प्रकाशन के लिए एक मात्र मानदंड भगवान राम और रामायण के बारे में जानने के लिए पाठकों की जिज्ञासा बढ़ाने का है।

लेखकों से अनुरोध है कि वे निम्न मुद्दों को ध्यान में रखते हुए अपने लेख भेजें।

a) लेख की विषय वस्तु सीधे रामायण और भगवान राम से संबंधित होनी चाहिए।

b) लेख स्पष्ट सरल बोलचाल की भाषा में होना चाहिए जो एक आम व्यक्ति समझ सके।

c) मूल अप्रकाशित लेखों को प्राथमिकता दी जायेगी। पूर्व-प्रकाशित लेखों पर विचार किया जा सकता है यदि पुन: प्रकाशित करने के लिए आवश्यक अनुमति प्राप्त की गई हो और कॉपीराइट का कोई उल्लंघन नहीं किया गया हो।

d) लेख एक नया दृष्टिकोण प्रदान करे, जानी-मानी कथा-कहानियाँ प्रकाशित नहीं होंगी।

e) वैज्ञानिक, ऐतिहासिक, या साहित्यिक साक्ष्य के आधार पर लेख विशेष आमन्त्रित हैं।

f) लेख 1000 शब्दों में सीमित होने चाहिए। अतिशय लंबे लेख प्रकाशित नहीं किये जायेंगे।

g) प्रकाशन निर्णय पर अंतिम अधिकार प्रधान संपादक का होगा।

रचनाएँ भेजने और अन्य जानकारी के लिए लिखें: jigyasa@ramacharit.org

राम जिज्ञासा सदस्यता शुल्क

वार्षिक सदस्यता: रु. 151 (भारत के भीतर) US $11 (अन्यत्र)

त्रि-वार्षिक सदस्यता: रु. 351 (भारत के भीतर) US $31 (अन्यत्र)

पञ्च-वार्षिक सदस्यता: रु. 501 (भारत के भीतर) US $51 (अन्यत्र)

थोक प्रतियों के लिए विशेष सदस्यता शुल्क उपलब्ध हैं।

सदस्यता, विज्ञापन, मानार्थ प्रति प्राप्ति और अन्य जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें: jigyasa@ramacharit.org

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों, विज्ञापनों, जानकारी, सूचना, राय और सामग्री संबंधित लेखकों/विज्ञापनदाताओं की एकमात्र ज़िम्मेदारी है। प्रकाशक, प्रधान संपादक और संपादकीय परामर्श मंडल का कोई उत्तरदायित्व नहीं होगा।

राम जिज्ञासा, राम चरित भवन, ह्यूस्टन, यू एस ए द्वारा त्रैमासिक (जनवरी, अप्रैल, जुलाई, अक्टूबर) प्रकाशित किया जाता है।

राम जिज्ञासा संरक्षक

राम जिज्ञासा का प्रकाशन और वितरण अनेक संरक्षकों की उदारता से संभव हुआ है। व्यक्तिगत और पारिवारिक संरक्षक को क्रमश: 5 और 10 प्रतियाँ भेजी जाती हैं। ये प्रतियाँ उनकी ओर से संसार के किसी भी पते भेजी जाती हैं। राम जिज्ञासा संरक्षक बनने के लिए वार्षिक योगदान 501 रुपये (व्यक्तिगत) और 1001 रुपये (पारिवारिक) की राशि भेजें। यदि आप राम जिज्ञासा के प्रचार और प्रसार में सहयोग देना चाहते हैं, तो कृपया लिखें: jigyasa@ramacharit.org

अमर नाथ और प्रेम अग्रवाल, यू एस ए
कृष्णा कुमार और सुनीता अग्रवाल, भारत
मुन्ना लाल और अर्चना अग्रवाल, यू एस ए
राम प्रकाश अग्रवाल, यू एस ए
रविश और शोभा अग्रवाल, यू एस ए
अजय और शोभा अग्रवाल, यू एस ए
ब्रह्म अग्रवाल, यू एस ए
सचिन और हरिप्रिया अग्रवाल, यू एस ए
सीता राम अग्रवाल, भारत
सुशील और विमला अग्रवाल, यू एस ए
दामोदर और ललिता ऐरन, यू एस ए
विरिंदर और नीना बंसल, यू एस ए
अरविंद और सुनीता भंडारी, यू एस ए
तन्मोय और बिंदु चक्रवर्ती, यू एस ए
नरेश और आशा चंद, यू एस ए
अरुण कुमार और कृष्णकांती चौधरी, भारत
प्रमोद और पूनम दीवान, यू एस ए
श्री के. और सुधा गोयल, यू एस ए
विपिन और सारिका गोयल, कनाडा
अजय और अल्का गुप्ता, यू एस ए
आनंद और पुष्प गुप्ता, भारत
अंकुर और निधि गुप्ता, भारत
हरि और मंजू गुप्ता, यू एस ए
नैम और शैला गुप्ता, यू एस ए
रामलक्ष्मण गुप्त, भारत
संत दास और गीता गुप्ता, यू एस ए
शिवानी सिंघल गुप्ता
सीता राम गुप्ता, भारत
सुप्रभा गुप्ता, यू एस ए
योगेश और मोनिका गुप्ता, यू एस ए
रघुनाथप्रसाद सर्राफ, भारत
अनुज और स्वाति जैन, यू एस ए
राघबेन्द्र झा, ऑस्ट्रेलिया
राकेश और अनीता कपूर, यू एस ए
तीर्थ खुशलदासानी, यू एस ए
राहुल कुलकर्णी, भारत
बिरेन्द्र और हेमा लाल, यू एस ए
रामदास लैम्ब, यू एस ए
आशीष महादाया, यू एस ए
जुगल और राज मलानी, यू एस ए
अल्का मल्लिक, यू एस ए
अरविंद और अनामिका मल्लिक, यू एस ए
राम और सरस्वती मल्लिक, यू एस ए
लक्ष्मी नारायण और उषा मेहरा, यू एस ए
निखिल और अवनी मेहता, यू एस ए
प्रमोद और मीनाक्षी मेहता, यू एस ए
सतीश और सुमन मेहता, यू एस ए
रवि और नयना मिस्त्री, यू एस ए
गोपाल और सीता मित्तल, यू एस ए
सुशीला मोहनका, यू एस ए
हुकम और सीता मोंगिया, यू एस ए
मंगलेश मुजमेर, यू एस ए
तारा सी और राजन नुवाल, यू एस ए
रमेशचंद्र और कोकिला पटेल, यू एस ए
सेन पाठक, यू एस ए
चंद्रशेखर रघु, यू एस ए
इंद्रानी रामप्रसाद, त्रिनिदाद
स्वदेश राणा, यू एस ए

अशोक रास्तोगी, भारत
जोगेंद्र और रेणु शर्मा, भारत
अनीता सिंह, भारत
दिनेश एच सिंघल, यू एस ए
रघुबीर और इंद्रा सिंघल, यू एस ए
सत्यन और राज सिंघल, भारत
दिलीप और प्रतिमा सोनी, यू एस ए
राघेंद्र उपाध्याय, यू एस ए

भारत के निवासी 501 रुपये (व्यक्तिगत) और 1,001 रुपये (परिवार- पति-पत्नि) का योगदान करके संरक्षक बन सकते हैं। आप डीडी/चेक द्वारा भेज सकते हैं: श्री राम चरित भवन, 1-बी वृंदावन पार्क, संतोषी नगर के पास, समा रोड, वडोदरा 390008। अगर आप एन ई एफ टी का उपयोग करना चाहते हैं तो कृपया jigyasa@ramacharit.org पर लिखें ताकि हम आपको बैंक विवरण भेज सकें।

राम जिज्ञासा संस्थागत संरक्षक

राम जिज्ञासा का प्रकाशन और वितरण हमारे संस्थागत संरक्षकों की उदारता से संभव हो पाया है जिनके हम आभारी हैं। राम जिज्ञासा के प्रचार और प्रसार के लिए हम सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, सार्वजनिक और निजी संस्थाओं को आमंत्रित करते हैं। अपेक्षित वार्षिक योगदान 5001 रुपये है। हम अपने संस्थागत संरक्षकों को एक वर्ष (4 अंको) के लिए राम जिज्ञासा की 50 प्रतियां भेजेंगे। संस्थाओं का नाम राम जिज्ञासा के हर अंक में प्रकाशित किया जायेगा। अधिक जानकारी के लिए, कृपया लिखें: jigyasa@ramacharit.org

सुमंडली, ह्यूस्टन, यू एस ए
श्री राम मंदिर ट्रस्ट, जयपुर, भारत
तुलसी मानस प्रतिष्ठान, भोपाल, भारत
अग्रवाल वैश्य सभा, दिल्ली कैंट, भारत
श्री राधा कृष्णा मंदिर, ह्यूस्टन, यू एस ए
श्री गोविंद जी गौडिया मठ, ह्यूस्टन, यू एस ए
श्री हनुमान सेवा संघ, दिल्ली कैंट, भारत
रघुनाथन रामलीला समिति, दिल्ली कैंट, भारत

डीडी/चेक देय भेजने का पता: श्री राम चरित भवन, 1-बी वृंदावन पार्क, संतोषी नगर के पास, समा रोड, वडोदरा 390008. अगर आप एन ई एफ टी का उपयोग करना चाहते हैं तो कृपया jigyasa@ramacharit.org पर लिखें ताकि हम आपको बैंक विवरण भेज सकें

शुभ कामना सन्देश

भगवान राम और उनकी रामकथा के शोध और विस्तार को समर्पित ह्युस्टन (अमेरिका) से प्रकाशित अंग्रेज़ी पत्रिका 'रामक्वेस्ट' के हिन्दी संस्करण 'राम जिज्ञासा' का प्रकाशन श्री ओमप्रकाश गुप्ता और उनके परामर्श मंडल का एक अभिनव अनुष्ठान है। यह भगवदेच्छा ही कही जायेगी कि अपने नवीन कलेवर में विश्व के व्यापक पटल पर प्रकाशमान यह पत्रिका अपनी विजय वैजयन्ती 'जयपुर' भारत से परिप्रसारित कर रही है। इस अभिनव प्रकल्प से बन्धुवर ओमप्रकाश जी ने मुझे अनादि अवस्था से जोड़ रखा है। मुझे तो लगता है कि इस प्रयोजन से प्रभु राम ही जैसे मुझे अपनी 'चाकरी' में रखकर मेरे जीवन को सारवत्ता प्रदान कर रहे हैं। एतदर्थ, विश्व में राम राज्य के शाश्वत जीवन मूल्यों की अभिप्राप्ति में अपनी संपूर्ण श्रद्धा, भक्ति और भाव में संप्रयोज्य, संप्रयुक्त -

प्रभुदयाल मिश्र, अध्यक्ष, महर्षि अगस्त्य वैदिक संस्थानम्, भोपाल, भारत

यह जानकर हार्दिक आनंद की अनुभूति हो रही है कि 'ह्यूस्टन' से 'राम जिज्ञासा' का प्रकाशन होने जा रहा है। यहाँ भारत में हिन्दी साहित्य प्रेमियों को जहाँ यह आश्चर्य होना स्वाभाविक है कि सुदूर अमेरिका से हिन्दी में एक पत्रिका का प्रकाशन होने जा रहा है वहीं इस बात की खुशी भी है कि हमारे देशवासी परदेश में रहते हुए भी इतने मनोयोग से हिन्दी की सेवा कर रहे हैं। मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ और तुलसी मानस संस्थान की ओर से शुभ कामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

रामलक्ष्मण गुप्त, अध्यक्ष, तुलसी मानस संस्थान, जयपुर

भारत में 'मानस चतुश्शदी' समारोह की श्रंखला में लगभग आधी सदी पूर्व संस्थापित 'तुलसी मानस प्रतिष्ठान, श्यामला हिल्स, भोपाल' रामचरित के शोध, सम्प्रसार और परिप्रसारण के लिए देश–विदेश में अपनी स्थापना काल से संलग्न है | अतः 'रामक्वेस्ट' (अंग्रेजी) और उसके हिन्दी संस्करण 'राम जिज्ञासा' के प्रकाशन में हम अपने प्रयोजन की ही सिद्धि ही देखते हैं जिसके लिए इस पत्रिका के सहयोगी, सलाहकार और सम्पादक मंडल, विशेषकर श्री ओमप्रकाश गुप्ता के प्रति हम अपनी संविशेष सद्भावना प्रकट करते हैं |

श्री ओम प्रकाश जी गुप्ता अपने शोध, संरचना और सम्प्रकाशन में हमारे संस्थान तो पधारे ही हैं, वे लगातार हमारे संस्थान और उसके पदाधिकारियों के संपर्क में भी रहे हैं | यह उनके सदाशयी व्यक्तित्व और शोधकार्य की सम्पूर्णता की अवधारणा की ही पुष्टि करता है | हम इस अनुष्ठान की सफलता की मंगल कामना करते हैं |

रमाकांत दुबे, कार्याध्यक्ष, तुलसी मानस प्रतिष्ठान, श्यामला हिल्स, भोपाल-२

मर्यादा पुरुषोत्तम राम

के एस भारद्वाज

श्री के एस भारद्वाज समाजशास्त्र और शिक्षाशास्त्र में स्नातकोत्तर तथा अंग्रेजी शिक्षण एवं प्रशिक्षण-विकास में स्नातकोत्तर डिप्लोमा धारक है। आप भगवान परशुराम शिक्षण-प्रशिक्षण संस्थान के पूर्व प्राचार्य-निदेशक हैं। इनके प्रकाशन हैं: शाश्वत प्रेम (उपन्यास) समय के हस्ताक्षर (कविता) शिक्षण क्षेत्रीय मानव संसाधन विकास, सूक्ष्म शिक्षण चिंतन एवं उपयोग, प्रज्ञा-प्रशिक्षण, Humour in Classroom, Human Resource Development in Education, and Love Beyond Horizons.

राम राम पाठकगण। जिन श्री राम ने महलों को छोड़ वनों में विचरना स्वीकार किया, उनका महल बनाने के लिए उत्पात हो रहा है। राम मंदिर। अरे धूर्तो ! राम के सपने पूरे करने हैं तो रामराज्य स्थापित कर के दिखाओ और राम-भक्तों का कुछ उपकार करो। राम के नाम पर खून न बहाओ।

ये संयोग था या श्रीराम की इच्छा कि जिन दो महानुभावों ने रामायण रचना की, वे दोनों ही जीवन के पूर्वार्द्ध में वासनाओं में लिप्त थे। दोनों ही चोट खाकर सद्गुणी बने। एक को सप्तऋषियों ने आघात दिया दूसरे को पत्नी ने। अगर ध्यान से देखें तो रत्नाकर को चोट सिर्फ सप्तऋषियों ने ही नहीं दी बल्कि उसमें उनकी पत्नी का भी बड़ा योगदान था। पत्नी ने कहा था- आपका धर्म है हमारा पालन-पोषण। आप कैसे कमाते हो, हमें क्या? आप अपने कर्मों के लिए उत्तरदाई और हम अपने कर्मों के। रत्नाकर की आँखें फटी की फटी रह गईं। वाल्मीकि जी और तुलसी जी के कायाकल्प में दोनों की पत्नियों का बड़ा योगदान है। दोनों के जीवन में अभूतपूर्व साम्यता है।

इस सब को देखते हुए हमें तो लगता है तुलसीदासजी ही पूर्वजन्म में रत्नाकर ही थे जो बाद में आदिकवि वाल्मिक हुए और रामायण की रचना की। रामायण जनसाधारण के लिए क्लिष्ट और अगम्य थी, सो वाल्मीकि जी ही तुलसी के रूप में पुन: प्रकट हुए और रामचरितमानस की आम बोलचाल में अभूतपूर्व रचना की।

राम है छोटा सा नाम मगर सम्पूर्ण कायनात को अपने में समेटे हुए। स्मरण में आसान, मनन में आसान। उल्टा जपो या सुलटा, श्रेष्ठ परिणाम। वाल्मीकि जी उर्फ़ रत्नाकर उदाहरण हैं। सप्तऋषियों ने सलाह दी, "राम का नाम जपो।" रत्नाकर ठहरे डकैत। राम का नाम कभी लिया नहीं था। सदैव मरने मारने की बात कही थी या सुनी थी। अब राम का नाम जिव्हा पर आये तो आये कैसे? बड़ी उलझन हुई। बोले सप्तऋषियों से,"कभी राम का नाम लिया नहीं। न ले सकता हूँ। सदैव मरना मारना सीखा है या सुना है। कोई और उपाय बताएं।" सप्तऋषियों ने गुत्थी सुलझा दी। कहा, "मरना मारना जाने हो। तो ठीक है। आप "मरा मरा" तो जप सकते हो? तो "मरा मरा" ही जपो।"

डकैत ठहरा दृढनिश्चयी। डकैतों से अधिक दृढनिश्चयी भला और कौन हो सकता है? क्षण क्षण मौत से लोहा लेने वाले; मगर क्या मजाल कि निश्चय से डिग जाएँ। निष्ठा के साथ शुरू

हो गया, "मरा, मरा, मरा, मरा ।" थोड़ी देर बाद ध्वनि स्वत: आने लगी "राम राम राम राम ।" और हो गया रूपान्तरण । बन गए आदिकवि और रच डाला महाकाव्य, "रामायण ।" राम ही बने महानायक । ऐसा महानायक जिसने कदम कदम पर मर्यादाओं का न केवल पालन किया बल्कि उनकी पुष्टि भी की ।

राम मर्यादापुरुषोत्तम राम के नाम से ही अधिक जाने जाते हैं बजाय कि भगवान राम के । कारण स्पष्ट है । उन्होंने पल पल क्षण क्षण मर्यादाओं का पालन किया । पुत्र रूप में माता-पिता के प्रति । शिष्य के रूप में गुरु के प्रति । सखाभाव मित्रों के प्रति । कौन सा क्षेत्र है जहाँ राम ने मर्यादाओं का पालन न किया हो? और तो और शत्रु रावण को भी मर्यादानुसार विदा किया और भाई लक्ष्मण को कहा, "महापंडित रावण से दीक्षा ले लो । वे दुर्लभ हैं ।"

आलोचक राम में भी दोष ढूंढ लेते हैं । मगर वे उस तथाकथित दोष के गूढार्थ से वंचित रह जाते हैं । आलोचक कहते हैं सीताजी को पुन: वनवास देना स्त्री के प्रति अन्याय था । चलिए थोड़ी देर के लिए आलोचकों की ही मान लेते हैं । मगर उनसे एक प्रश्न करना तो हमारा भी हक़ है ना ? हम उनसे पूछना चाहते हैं कि राज-काज संभालते हुए राजा राम ने प्रजा के प्रति जो वचन दिए थे, क्या वे पत्नी के कारण झुठलाये जा सकते थे? मर्यादापुरुषोत्तम राम उन्हें कैसे भूल सकते थे ? प्रजा में राज परिवार के एक सदस्य के प्रति भी संदेह संदेह-निवारण हेतु राजा का उत्तरदायित्व चौगुना बढ़ा देता है क्योंकि संदेह परिवार के सदस्य पर है; नहीं तो राजा अपनी प्रजा के प्रति मर्यादाहीन हो जायेगा । अपने परिवार का पक्ष लेने का आरोप लगेगा । इससे राजपरिवार की प्रतिष्ठा पर आंच आनी निश्चित है । अत: राम ने पत्नि के वियोग को स्वीकार करना उचित समझा और सीताजी ने भी अपने पति के वचनों की मर्यादा की रक्षा की तथा पति-वियोग सहर्ष स्वीकार किया ।

और वचन निभाना कोई सीखे तो श्रीराम से । श्रीराम को लौटाने हेतु भरत जी अपनी माताओं, ससुर जनक और गुरुजी को साथ ले कर वन गए । गुरु की बात सर्वोपरि होती है । मगर श्रीराम ने जिन मर्यादाओं के साथ गुरु, माताओं और भाई के आदेश या अनुरोध का मान रखा, वो मर्यादापुरुषोत्तम राम के वश की बात थी । इसी से लोकोक्ति भी बन गई: रघुकुल रीत सदा चली आई, प्राण जाएँ पर वचन न जाईं ।"

हम तो बल्कि ये कहेंगे कि रामायण या बाद में तुलसी रचित रामचरितमानस धार्मिक ग्रन्थ की बजाय सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक ग्रन्थ अधिक है । अगर हम सामाजिक और नैतिक सरोकारों का निष्ठापूर्वक पालन करते हैं तो हम आध्यात्म से वंचित कैसे रह सकते हैं? सनातन धर्म जीवन को चार आश्रमों में विभाजित करता है । प्रत्येक आश्रम की कुछ मर्यादाएं निश्चित हैं । हर आश्रम के कुछ कर्तव्य हैं । उन्हीं मर्यादाओं और कर्तव्यों का पालन ही तो आध्यात्म है । और इसे रामचरितमानस से बढ़िया विधि से कौन सा ग्रन्थ नई पीढ़ियों को सिखा/पढ़ा सकता है? इसके समकक्ष सिर्फ श्रीमदभगवद्गीता आती है । मगर श्रीमदभगवद्गीता को पढना समझना हर किसी के वश की बात नहीं । अत: रामचरितमानस सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ है क्योंकि ये आम बोलचाल में रचित है जिसे साक्षर व्यक्ति भी पढ़ और समझ सकता है ।

रामायण एक काल्पनिक ग्रन्थ या एक वास्तविकता

सुनीता काम्बोज

हिन्दी और इतिहास में परास्नातक सुनीता काम्बोज की रचनाएँ राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में निरंतर प्रकाशित हो रही हैं। ग़ज़ल, गीत, छंद, बालगीत, भजन, व्यंग्य, आलेख, समीक्षा आदि विधाओं में लिखने वाली सुनीता काम्बोज के दो काव्य-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं तथा चार पुस्तकें प्रकाशाधीन हैं। 'कविताकोश' के साथ-साथ अन्य ब्लॉग्स पर भी उनकी कविताएँ पढ़ी जा सकती हैं। अपने ब्लॉग 'मन के मोती' पर भी वह सक्रिय हैं। दूरदर्शन जालन्धर एवं विश्वपुस्तक मेले में तथा अनेक साहित्यिक कार्यक्रमों में वह कविता पाठ कर चुकी हैं। यू ट्यूब में उनकी कई प्रस्तुतियाँ उपलब्ध हैं।

श्री रामचरितमानस महाकाव्य उच्च जीवन, आदर्श, त्याग, वीरता, कर्त्तव्य, प्रेम, समर्पण आदि नैतिक मूल्यों का दर्पण है। यह महाकाव्य हर युग में संसार के लिए शिक्षाप्रद रहेगा। धार्मिक और साहित्यिक दृष्टिकोण से यह महाग्रन्थ भारत ही नहीं अपितु अन्य देशों में भी लोकप्रिय है। रामायण काल के साक्ष्य आज भी भारत एवं आसपास की धरती पर विद्यमान हैं। इस लेख का उदेश्य यह समझना है कि क्या महाकाव्य रामायण एक काल्पनिक कथा है या हजारों साल पहले घटित श्री रामचंद्र जी के जीवन काल की ऐतिहासिक घटना है ?

जब ऐतिहासिक घटनाएँ बहुत लम्बा सफर तय कर लेती हैं तब कुछ बुद्धिजीवी उनकी प्रमाणिकता पर संशय करने लगते हैं। 18वीं एवम् 19 वीं शताब्दी में घटने वाली घटनाएँ इसलिए सत्य प्रतीत होती है क्योंकि उनके साक्षी हमारे पास है। परन्तु जब धीरे-धीरे इन घटनाओं पर समय की परत चढ़ती जाती हैं, तब कुछ लोग उन्हें सत्य मानते हैं तथा कुछ लोग उन्हें मात्र एक उपन्यास की नज़र से देखने लगते हैं। आगे आने वाली पीढियाँ इस बात पर ही अचम्भित हुआ करेंगी कि क्या सच में भारत गुलाम रहा था या उस समय की यह मात्र एक कल्पना है ? अन्धविश्वास हमें जहाँ सत्य से दूर ले जाता है वहीं संदेह और तर्कशील दृष्टिकोण हमें सत्य के करीब ले आता है। यही बात पावन ग्रन्थ रामचरितमानस के सन्दर्भ में सही साबित होती है। जब कुछ बुद्धिजीवियों ने रामायण को मात्र एक काल्पनिक कहानी कहा, तब इस ग्रन्थ पर अनेक शोधकार्य हुए। राम कथा में अंकित स्थानों के ऐतिहासिक एवम् वैज्ञानिक दृष्टिकोण के सर्वेक्षण ने अनेक बुद्धिजीवियों के मुँह पर ताले लगा दिए। राम निवास जाजू की पुस्तक 'मेरे सौरभ द्वार' के पृष्ठ संख्या 300 के अनुसार इटली के फ्लोरेंस विश्वविद्यालय में पी. एल. तेस्सी तोरी ने सन 1911 में तुलसीदास पर पहली पी.एच.डी. उपाधि प्राप्त कर अनेक विद्वानों को चकित कर दिया। उन्होंने रामचरितमानस और रामायण पर शोध कार्य किया। दूसरा शोध कार्य लन्दन के जे. एन. कारपेंटर द्वारा 1918 में किया गया। इस शोध को ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय ने प्रकाशित किया। भारत में तुलसीदास पर पहली पी. एच. डी. नागपुर विश्वविद्यालय में सन 1938 में बलदेव प्रसाद मिश्र ने प्राप्त की।

1934-35 में बेल्जियम से भारत आए फादर कामिल बुल्के ने राम कथा की उत्पति और विकास पर कार्य करके 'इलाहबाद विश्वविद्यालय' से पहले डी.फिल. तथा बाद में 1950 में

पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त कर रामायण को विश्व साहित्य की धरोहर का दर्जा दिलवाया। फादर कामिल बुल्के ने पूरी दुनिया में रामायण से जुड़े 300 रूपों की पहचान की। अलौकिक महाकाव्य रामचरितमानस के कारण ही, तुलसीदास जी ने भारत ही नहीं अपितु विदेशों में भी ख्याति पाई। राम निवास जाजू की पुस्तक 'मेरे सौरभ द्वार ' के पृष्ठ संख्या 300 के अनुसार दक्षिण भारत के एक विश्वविद्यालय ने एक सेमीनार के दौरान यह सिद्ध किया कि तुलसीदास पर अनेक भाषाओं में 7,500 से अधिक शोध पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं। सुलभ अकादमी की पत्रिका ने यह दावा किया है कि महाकवि तुलसीदास के साहित्य पर पी.एच.डी. और डि.लीट. पर पाँच-सौ से ज्यादा डिग्रियाँ दी जा चुकी हैं। संसार के अन्य किसी कवि पर इतना शोध कार्य अब तक नहीं हुआ। तुलसीदास द्वारा रचित साहित्य अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी लोकप्रिय है।

कृष्ण कुमार गोस्वामी द्वारा लिखित पुस्तक 'अनुवाद विज्ञान की भूमिका' के अनुसार रूस के प्रतिष्ठित लेखक अलेक्सेई पेत्रिविच वरान्नि कोव ने सन 1948 में तुलसीदास रामायण का पद्यानुवाद रुसी भाषा में किया इसमें उनके सुपुत्र प्यात्र अलेक्सेयेविच वरान्नि कोव ने भी सहायता की। उन्होंने रामचरितमानस को विश्व की 2,796 भाषाओं में लिखी अन्य कृतियों से अधिक सर्वश्रेष्ट महाकाव्य घोषित किया।

1988 में चीनी लेखक जिन-दिन-हान ने मानस का छन्दबद्ध अनुवाद चीनी भाषा में किया। यह चीन में बहुत लोकप्रिय हुआ। जापानी भाषा में मानस का 1991 में इकेदा ने 'भगवान राम के चरित्र का सरोवर' नाम से अनुवाद किया। वैसे रामचरितमानस को अपनी प्रमाणिकता सिद्ध करने की कोई आवश्यकता नहीं क्योंकि मधुर निर्मल राम कथा भारत ही नहीं बल्कि और भी कई देशों के निवासियों के हृदय में निवास करती हैं। महर्षि वाल्मीकि ने संस्कृत भाषा में पहले रामायण की रचना की। बाद में तेलगू, मराठी, हिंदी, बँगला, उड़िया आदि अन्य भाषाओं में इसका अनुवाद हुआ। आगे चलकर तुलसीदास जी ने संवत् 1631 को त्रेतायुग जैसे रामनवमी का योग जानकर श्री रामचरितमानस का आरम्भ किया तथा संवत् 1633 में शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को इसे भारतीय संस्कृति का हिस्सा बनाया। तुलसीदास जी ने संस्कृत रामायण को अवधी भाषा में दोहा, सोरठा, चौपाई आदि छंदों में पिरोकर रामचरितमानस को भारत के जन-जन तक पहुँचाया।

कुछ शोध शास्त्रियों के अनुसार रामायण काल 7,323 ईशा पूर्व, यानी आज से 9,341 वर्ष पूर्व बताया गया है। जबकि कुछ शोध शास्त्रियों ने श्रीराम का जन्म 5,114 ईशा पूर्ण चैत्र मास की नवमी का बताया है। रामायण काल के समय पर अभी भी बुद्धिजीवियों के अलग अलग मत हैं।

भारतीय पुरातत्त्व विभाग और आई. आई. टी. खड़गपुर के कुछ शोध शास्त्रियों ने सिन्धु घाटी 5,500 साल नहीं बल्कि 8,000 साल पुरानी होने के संकेत दिए हैं। यह शोध प्रतिष्ठित रिसर्च पत्रिका 'नेचर' ने 2016 में प्रकाशित किया। इस दौरान वैज्ञानिकों ने नई तकनीक द्वारा इस सभ्यता की उम्र का पता लगाया। प्रसिद्ध इतिहाकार व पुरातत्त्वशास्त्री डॉ. राम अवतार शर्मा ने रामायण काल से सम्बन्धित वैज्ञानिक शोध से लगभग 200 स्थानों का पता लगाया।

वनवास के समय जहाँ सीता-राम जी ठहरे उन स्थानों के स्मारकों, गुफाओं, भित्तिचित्रों का गहन जाँच पड़ताल से अध्ययन कर अनेक साक्ष्य प्रस्तुत किए।

हरियाणा के दरेली गाँव के रहने वाले डॉ. राम अवतार शर्मा ने 21 देशों की यात्राएँ की तथा राम से जुड़े साक्ष्य एकत्रित किए। उन्होंने कहा कि करीब 50 देशों में राम पूजा होती हैं। राम अवतार शर्मा ने इस समयावधि में करीब 290 चित्र लिए जो उन्होंने चित्रकूट पर एक संग्रहालय बनवाकर उसमे स्थापित किए हैं। डॉ. राम अवतार शर्मा ने केवट प्रसंग से जुड़े सिंगरौर (इलाहबाद से करीब 35 किलोमीटर), कुरई, चित्रकूट, अत्रि ऋषि आश्रम, दंडकारण्य (मध्यप्रदेश एवं छतीसगढ़ के जंगल) पंचवटी, पर्णशाला (आंध्रपदेश), सबरी आश्रम (केरल), ऋष्यमूक पर्वत, कोडीकरई, चंदन वन, मलय पर्वत, रामेश्वरम, धनुषकोडी, लंका, अशोक वाटिका आदि स्थानों के बारे में प्रमाणिक जानकारी एकत्रित की। भारतीय सेटेलाइट और अमेरिका के अनुसन्धान संस्थान 'नासा' के उपग्रह ने जब ऐतिहासिक 'रामसेतु' जो धनुषकोडी तथा श्रीलंका के बीच में 48 कि.मी. चौड़ी पट्टी एक रेखा के रूप में दिखाई देता है, के चित्र खींचे तब इसके राम सेतु होने के संकेत मिले। 1993 में इन चित्रों को दिल्ली प्रगति मैदान में 'राष्ट्रीय विज्ञान केंद्र' में प्रदर्शनी के लिया रखा। जब कुछ वैज्ञानिकों ने इसे मानव निर्मित बताया, तब रामसेतु पर अनेक वाद-विवाद होने लगे। भारतीय सर्वेक्षण विभाग तथा अमेरिकी भूगर्भ वैज्ञानिकों की एक टीम ने रामसेतु को मानव निर्मित घोषित कर उसे ऐतिहासिक विरासत का दर्जा दिया। एक अमरीकी सांइस चैनल ने रामसेतु पर "एनशिएंट लैंड ब्रिज" नाम से शो बनाया है। यह शो अमरीकी वैज्ञानिकों की शोध पर आधरित है जिसमे रामसेतु को एक बड़ी मानवीय उपलब्धि के रूप में दिखाया गया है। बुद्धिजीवी आलोचक, राजनीतिक सियासत भले ही आज भी रामसेतु पर विवादित ब्यान देती रही है, परन्तु लोगों की आस्था हमेशा राम सेतु से जुड़ी हुई हैं। यह सेतु इस बात का प्रतीक है कि रामायण काल में विज्ञान के आविष्कार अपनी चरम सीमा पर थे। रामायण काल में इस सेतु का नाम 'नलसेतु' रखा गया बाद में इसे रामसेतु, सेतुबंध आदि नामों से जाना जाने लगा। जब मुगल भारत में आए तब वह इस सेतु को आदम पुल कहने लगे। बाद में ब्रिटिश सरकार ने जब यहाँ रेल मार्ग का निर्माण करवाया, इंग्लिश उच्चारण के कारण 'आदम पुल' को वह 'एडम ब्रिज' कहने लगे।

वैज्ञानिक आधार पर इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि उस समय का विज्ञान बहुत उन्नत रहा होगा। रावण द्वारा लिखित 'रावण सहिंता' के अध्ययन से आज भी विज्ञान ज्योतिष को समझा जा रहा हैं। आज जिस परमाणु बम को बनाकर संसार अपने आप को सर्वशक्तिमान समझ रहा है, रामायण से ज्ञात होता है कि उस काल में इससे भी समृद्ध विस्फोटकों का निर्माण हो चुका था। सुंदरकाण्ड की एक चौपाई में श्री रामचन्द्र द्वारा बाण से समुद्र को सुखाने की बात वर्णित हैं। आज जो प्लास्टिक सर्जरी प्रचलित है उस शल्यचिकित्सा का निर्माण भारतीय ऋषि बहुत वर्षों पहले कर चुके थे। आयुर्वेद, योग, प्राणायाम आदि प्राचीन ऋषियों की ही देन हैं। जो शब्द भेदी बाण दशरथ ने श्रवण कुमार पर चलाया था, वह विद्या पृथ्वीराज के समय तक भी जिन्दा रही जब भरी सभा में नेत्रहीन पृथ्वीराज ने महोम्मद गौरी पर शब्द भेदी बाण चलाकर उसे मार गिराया। यह हमारे अद्वितीय

गौरवशाली इतिहास का प्रतीक है। आने वाले कुछ वर्षों में पृथ्वीराज चौहान की इस घटना पर भी आलोचक संदेह कर सकते हैं। रामायण काल के भवनों के कुछ अंश आज तक भी मूक गवाह बने हुए है। यह उस काल के बेजोड़ इंजीनियरिंग तकनीक के उन्नत होने का प्रमाण है। मन की गति से चलने वाला पुष्पक विमान आज भले ही एक कल्पना मात्र लगे पर आज तक आधुनिक वैज्ञानिक भी मन की गति से चलने वाले विमान बनाने में सफलता हासिल नहीं कर सके। रामायण काल, संस्कार, मर्यादा, वचन, प्रजातंत्र आदि नैतिक मूल्यों का संवाहक रहा है। यह वैज्ञानिक काल भले ही बीता कल बन चुका है परन्तु इसके चिह्न भारत भूमि पर सदा रहेंगे।

इन तथ्यों से यह सिद्ध होता है कि वाल्मीकि रामायण कोई काल्पनिक कथा न होकर वास्तविक घटनाओं पर लिखी गई कृति है। श्री राम का जीवन चरित्र सबके लिए प्रेरणादायक है। श्री रामचरितमानस आदर्शों एवं नैतिक मूल्यों की गाथा से प्रभावित होकर भारत ही नहीं बल्कि अन्य देशों के विद्वान इस अद्भुत कृति के आगे नतमस्तक हुए। आज भी रामसेतु अपने प्राचीन स्वरूप में ऐतिहासिक धरोहर के रूप में हमें गौरान्वित कर रहा है।

अत्यंत हर्ष हो रहा है कि तर्कवितर्क से परे चिरन्तन सत्य संभाक मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु - माध्यम से मनुष्य के मन से संशय और जिज्ञासा को शांत करने राम जिज्ञासा श्रीराम के पत्रिका के प्रकाशन का शुभ समाचार मिला है । राम जिज्ञासा के प्रथम अंक का विमोचन ५ जनवरी २०१९ को रामायण अधिवेशन में होगा यह और भी अधिक प्रसन्नता की बात है। राम का मर्म दुनियाभर में राम जिज्ञासा फैलाने में सफल हो।

सुरेंद्र अग्निहोत्री,संपादक, नूतन कहानियाँ

अमेरिका जैसे विशाल, विकसित और संपन्न देश में स्थापित श्री राम चरित भवन द्वारा जनवरी 2019 में आयोजित द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय रामायण सम्मेलन में राम जिज्ञासा पत्रिका के प्रकाशन का शुभारंभ हो रहा है। यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि विदेशों में भारतीय मूल के प्रवासी भारतीय संस्कृति, भारतीय दर्शन, भारतीय परंपरा और हिन्दू धर्म का ध्वज उठाए हुए हैं। इससे यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि भारतीय संस्कृति और हिन्दू धर्म का विकास और प्रसार समूचे विश्व में हो रहा है। उसी शृंखला में राम जिज्ञासा पत्रिका का प्रकाशन हिन्दी में हो रहा है। इससे पहले यह संस्था रामक्वेस्ट नामक पत्रिका का प्रकाशन अंग्रेज़ी में कर रही है। राम एक ऐसे महान व्यक्तित्व हैं जिनके आदर्शपूर्ण और मर्यादापूर्ण जीवन की एक झलक मानव जाति के लिए महान हितकारी हो सकती है। इस लिए राम जिज्ञासा का प्रकाशन महत्वपूर्ण है। इसके आयोजकों, संपादकों और प्रकाशकों को बधाई और साधुवाद देते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। पत्रिका की सफलता के लिए मेरी शुभ कामनाएँ।

प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी, महासचिव एवं निदेशक, विश्व नागरी विज्ञान संस्थान, सदस्य, केंद्रीय हिन्दी समिति, भारत सरकार

बुंदेलखंड में रामकथा की व्याप्ति के पुरातात्विक साक्ष्य

हरिविष्णु अवस्थी

इतिहास, लोक भाषा, साहित्य और पुरातत्व में गहरी पकड़ रखने वाले श्री हरिविष्णु अवस्थी प्राचीन ओरछा राज्य की राजधानी टीकमगढ़ में निवास करते हैं। साहित्य और हिन्दी को समृद्धि प्रदान करने वाली लगभग एक सदी पुरानी श्री वीरेन्द्र केशव साहित्य परिषद् के वे अध्यक्ष हैं। उन्होंने बुन्देली के भाषा साहित्य तथा ऐतिहासिक और पुरातात्विक संपदा के शोध और संरक्षण की दिशा में आधा दर्जन ग्रन्थों की रचना करते हुये लगभग ४० ग्रन्थों का संपादन किया है।

बुंदेलखंड की विस्तृत सीमाओं को किसी साहित्यकार ने इस दोहे में बाँधने की चेष्टा की है-

इत यमुना उत नर्मदा इत चम्बल उत टोंस।
छत्रसाल सों लरन की रही न काहू होंस।

किन्तु वास्तव में बुंदेलखंड की प्राचीन राजनीतिक और सांस्कृतिक इकाई का बोध नीचे उद्धृत दोहे से ज्यादा सही रीति से होता है।

पूरब तीरथराज पुन पच्छिम श्री बृजवास।
उत्तर गंग जमुन अवध दक्षिण रेवा खास।

रामकथा के प्रथम रचनाकार महर्षि वाल्मीकि थे। महर्षि वाल्मीकि का आश्रम बुंदेलखंड में ही था | इसके अनेक लोक और पुरातात्विक प्रमाण हैं। भगवान् राम वनयात्रा काल में तो सीता सहित महर्षि वाल्मीकि से मिले ही थे, उन्होंने सीता को गर्भावस्था में निर्वासन काल में भी महर्षि वाल्मीकि के ही आश्रम के निकट छोड़ा था।

करीब डेढ़ सहस्र वर्ष पूर्व पांचवी शताब्दी के पूर्वार्ध में इस भूभाग के वर्तमान जिला पन्ना के 'नचना' नामक ग्राम में गुप्त तथा कलचुरी कालीन वैष्णव प्रतिमायें हैं। गुप्तकालीन लगभग आधा दर्जन नाभिकायें हैं जिन पर रामायण के दृश्य अंकित हैं। इनमें मुख्य रूप से निम्न दृश्यावलियाँ हैं –

1. धनुष यज्ञ का दृष्य
2. वन गमन के अवसर पर राम, लक्ष्मण और सीता वनपथ पर चलते हुए
3. अशोक वाटिका में सीता, और
4. नल-नील सहित सेतुबंध का निर्माण

नचना में रामकथा के शिल्पांकन के लगभग एक शताब्दी बाद छठी शताब्दी में देवगढ़, उत्तरप्रदेश में शिल्पांकन गुप्तकाल में हुआ। साहित्याचार्य पंडित हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इस सम्बन्ध में लिखा है –

"एक जगह शेष नारायण सो रहे हैं, लक्ष्मी उनकी पाद सेवा कर रही हैं, पञ्च पांडव और द्रोपदी नीचे खड़े हैं, ब्रह्मा, शिव और इंद्र आदि देवता ऊपर हैं। दूसरी जगह राम लक्ष्मण की मूर्तियाँ हैं। वे जंगल में हिरन और सिंह आदि जानवरों के बीच बैठे हैं |"

देवगढ के इन शिल्पांकन के सम्बन्ध में माधव स्वरूप वत्स ने भी लिखा- "मंदिर अधिष्ठान के दो कतारों में लगे हुए शिलापट्टों से अलंकृत था। इनमें रामयण और महाभारत के दृश्य अंकित किये गए हैं। रामायण समबन्धी शिल्पा पट्टों में अंकित है अहिल्या उद्धार, वन गमन, अगस्त्य आश्रम में राम, लक्ष्मण और सीता का जाना, सूर्पनखा के नाक कान काटना, बालि सुग्रीव युद्ध, लक्ष्मण के द्वारा सुग्रीव का अभिषेक और लक्ष्मण को जीवित करने के लिए हनुमान का औषधि लेकर द्रुतगामी होना, आदि।"

देवगढ के अतिरिक्त ललितपुर जिले में ही स्थित सिरोन खुर्द नामक ग्राम में चतुर्विंशति विष्णु, राम, परशुराम, छत्रधारी वामन, लक्ष्मी, हनुमान आदि की प्रतिमाएं प्राप्त हुई हैं। ज्ञातव्य है ९वीं सदी में बुंदेलखंड के इस भू भाग में प्रतिहारी शासकों का अधिकार था। प्रतिहार नरेश स्वयं को राम के भाई लक्ष्मण का वंशज मानते थे- रामभ्रातस्य प्रातिहार्य कृतायत:!

ललितपुर जिले में स्थित दूधी चांदपुर में भी कई प्रतिमाएं मिली हैं। इनकी कुल संख्या एक हजार से अधिक है। इनमें अनेक राम की प्रतिमाएं अग्निपुराण में विहित शिल्प विधि से बनाई गयी हैं।

बुंदेलखंड में चंदेलों का शासनकाल आठवीं-नवीं शताब्दी से बारहवीं शताब्दी तक रहा। चंदेल शासनकाल में विश्व प्रसिद्ध खजुराहो में यशोवर्मन (९३० ईशवी) ने लक्ष्मण मंदिर का निर्माण कराया जो अपने आप में अद्वितीय है। खजुराहो मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले में स्थित है। इसमें रामकथा प्रसंग के अनेक शिलापट्ट हैं। हनुमान की मूर्ति की पादपीठ पर उत्कीर्ण शिलालेख में संवत् ९४० अंकित है। चंदेल शासकों ने हनुमान छवि का अंकन अपनी राजकीय मुद्राओं में भी कराया था। सर्वप्रथम चंदेलवंश के शासक सल्लक्षण वर्मन (११००-१११५ ईशवी) की ताम्रमुद्रा पर हनुमान अंकित हुए। मुद्रा के अग्रभाग पर नागरी लिपि में 'श्रीमतशल्लक्षमण वर्मन देव" अंकित है | सल्लक्ष्मण वर्मन के बाद निम्न चंदेल शासकों ने इस तरह की मुद्राओं को प्रचलित किया –

1. जयवर्मन (१११५-११२० ईशवी) ताम्रमुद्रा वजन का ६० ग्रेन, अग्रभाग नागरी अभिलेख 'श्रीमद जयवर्मन देव', पृष्ठ भाग –हनुमान।
2. पृथ्वी वर्मन (११२०-११२९ ईशवी) ताम्रमुद्रा वजन ४१ ग्रेन, अग्रभाग नागरी लिपि – 'श्रीमत प्रथिवी वर्मा देव', पृष्ठ भाग –हनुमान।
3. मदन वर्मा (११२९-११६३ ईशवी) ताम्रमुद्रा वजन १५ ग्रेन, अग्रभाग नागरी लिपि अभिलेख – 'श्रीमत मदन वर्मा', पृष्ठ भाग –हनुमान।

खजुराहो के मंदिर में एक शिलापट्ट पर रामकथा का एक दृश्य अंकित है। शिलापट्ट पर श्री राम तथा सीता के साथ हनुमान दिखाए गए हैं। यह शिलापट्ट गठिया के बहिर्भाग में लगा है। इसमें श्रीराम के पार्श्व में सीताजी खड़ी हैं। बाईं ओर खड़े लक्ष्मण की मूर्ति बनी है। वे करंड मुकुट धारण किये हुए हैं। उनके मस्तक पर श्रीराम अपना दक्षिण कर पालित मुद्रा में रखे हुए हैं। इस शिलापट्ट का निर्माण काल दशवी सदी है। खजुराहो के ही पार्श्वनाथ जैन मंदिर की भित्ति पर राम सीता की एक सुन्दर नयनाभिराम मूर्ति उत्कीर्ण है। इनके पास ही कपिमुख उकेरे हुए हैं जिनके शीश पर राम का एक हाथ पालित मुद्रा में अनुग्रह भाव से रखा हुआ है।

टीकमगढ़ के वेदज्ञ विद्वान् आचार्य दुर्गाचार्ण शुक्ल का मत है कि सरकनपुर ग्राम, जो चंदेलकालीन ही है, में एक शिलापट्ट पर मनोहारी रीति से सेतुबंध के दृष्य का अंकन हुआ है।

बुंदेलखंड के ही एक जिले बांदा (उत्तर प्रदेश) में स्थित कालंजर किला मध्यकालीन भारत का सर्वोतम दुर्ग है, इसका पांचवां प्रवेश द्वार 'हनुमान दरवाजा' कहलाता है। यहाँ एक हनुमान कुंड है तथा बाजू में पर्वत काटकर हनुमान की मूर्ति बनाई गयी है। इसके भीतर पत्थर काटकर एक सीता शैया उत्कीर्ण है। यह चंदेल आगमन के एक वर्ष पूर्व निर्मित प्रतीत है।

स्वतंत्रता पूर्व भारत में बुंदेलखंड छोटी छोटी रियासतों में बंटा था। वर्तमान में इसकी सीमा मध्य प्रदेश और उत्तरप्रदेश राज्यों में विभाजित है। राजनीतिक एकतानता के इस अभाव से इस क्षेत्र का समुचित पुरातात्विक सर्वेक्षण अभी भी प्रतीक्षा ही कर रहा है। निश्चित ही यदि इस सांस्कृतिक महत्व के कार्य को प्राथमिकता से हाथ में लिया जाता है तो रामकथा के अनेक अज्ञात सूत्र इस क्षेत्र से प्राप्त किये जा सकते हैं।

CHICHIS Technologies

CHICHIS Technologies is providing services in artwork, creative design, offset/ screen priting and publication. *RamQuest* is a result of lab of CHICHIs Technologies

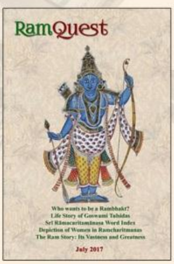

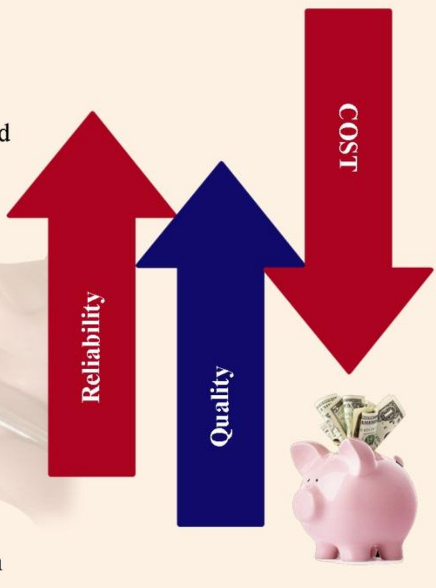

Visit: www.chichis-technologies.com
E-mail: info@chichis-technologies.com

असीम प्रेम और दया के उदधि: श्री राम

डॉ ज्योत्सना सिंह राजावत

चम्बल संभाग ग्वालियर क्षेत्र की लेखिका डॉ ज्योत्सना सिंह संस्कृत विभाग में सहायक प्राध्यापक पद पर पदस्थ। विभिन्न धार्मिक, सामाजिक विषयों पर शोध आलेख, अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय शोध गोष्ठियों में सहभागिता, दो काव्य संग्रह, एक हाइकु विधा पर प्रकाशित, एक कहानी संग्रह प्रकाशाधीन। समाचार पत्र पत्रिकाओं में नियमित प्रकाशन, बाल पत्रिका पर्यावरण दूत एवं सुरसरिता पत्रिका के सह संम्पादक का दायित्व।

रामायण भारतीय संस्कृति की अनुपम निधि है। रामायण और अन्य धार्मिक ग्रंथ भारतीय संस्कृति सभ्यता के आदर्शों को आज भी बनाए हुए हैं। महर्षि वाल्मीकि ने लगभग 24,000 श्लोकों में आदि रामायण लिखी जिसमें उन्होंने श्रीराम के चरित्र को आदर्श पुरुष के रूप में अंकित किया है। रामकथा के जीवन मूल्य आज भी सर्वथा प्रासंगिक हैं। राम एक आदर्श पुत्र, आदर्श पति एवं आदर्श राजा के रूप में हमारे मानस पटल पर अंकित हैं, और रामकथा के अन्य सभी पात्र किसी न किसी आदर्श को प्रस्तुत करते हैं। *रामायणस्यापि नित्यं भवति यद्गृहे। तद्गृहे तीर्थ रूपं हि दुष्टानां पाप* नाशनम्॥ जिस घर में प्रतिदिन रामायण की कथा होती है वह तीर्थ रूप हो जाता है। वहाँ दुष्टों के पाप का नाश होता है। कितनी अनूठी महिमा है राम नाम की। राम नाम को जपने वाला साधक राम की भक्ति और मोक्ष दोनों को प्राप्त कर लेता है, निर्गुण उपासकों के राम घट-घट वासी हैं- *कस्तूरी कुंडल बसे, मृग ढूंढ़े वन माहिं। ऐसे घट-घट राम हैं, दुनियां देखे नाहिं॥*

संत कबीर कहते हैं - *निर्गुण राम जपहु रे भाई, अविगत की गत लखी न जाई॥* घट-घट वासी राम की व्यापकता को स्वीकारते हुए संत कवि तुलसीदास जी कहते हैं – *सियाराम मय सब जग जानी। करहुं प्रणाम जोर जुग पानी॥* रामचरित मानस जन जन के जीवन की अमूल्य निधि है, जिसमे जीवन जीने की अद्भुत सीख दी गई है। गोस्वामी जी कहते है कि जीवन मरुस्थल है और रामचरित मानस ही इस मृगमय जीवन के लिए चिन्मय प्रकाश ज्योति है।

जिन्ह एहिं बार न मानस धोऐ। ते कायर कलिकाल बिगोए॥
तृषित निरखि रवि कर भव बारी। फिरहहि मृग जिमि जीव दुखारी॥

संस्कृत एवं अन्य भाषाओं में अनेक रामायण की रचना हुई है लेकिन राम का स्वरूप स्वभाव सब ग्रन्थों में एक समान ही है। भगवान शंकर स्वयं राम नाम के उपासक हैं।

रकारादीनि नामानि श्रृण्वतो मम पार्वति।
चेतःप्रसन्नतां याति रामनामाभिशंङ्कया॥

गोस्वामी तुलसीदास लिखते है कि घोर कलियुग में श्री राम नाम ही सनातन रूप से कल्याण का निवास है और मनोरथों को पूर्ण करने वाला है। आनंद के भण्डार श्री राम जिनका अनोखा रंग रूप सौन्दर्य जो भी देखता है ठगा सा रह जाता है। इतना ही नही उनका कल्याण करने का

स्वभाव जन हित की भावना के सभी उपासक है- *राम नाम को कलपतरु कलि कल्यान निवासु।*

प्रेम के उदधि से पूर्ण हृदय वाले राम, काम क्रोध आदि विकारों पर विजय प्राप्त कर शान्त चित्त से, धैर्य से, विपरीत परिस्थितियों में भी अपने आप आप को संयमित रखते हैं। स्नेह दया प्रेम से सबके हृदय में स्थित रहकर, अपने हृदय मे समाहित कर दया की धारा निरन्तर निर्झरित होकर बहती रहती है। यह अद्भुत शक्ति आह्लादित आनन्दित कर असीम सुख की अनुभूति प्रदान करती है। दया एक दैवीय गुण है, इसका आचरण करके मनुष्य देवत्व को प्राप्त कर लेता है। दयालु हृदय में परमात्मा का प्रकाश सदैव प्रस्फुटित होता है। दया के निधान दया के सागर ईश्वर स्वयं है। समस्त धरातल के प्राणियों में दया उस परम शक्ति से ही प्राप्त होती है। लेकिन मनुष्य अज्ञानता के वशीभूत होकर दया को समाप्त कर राक्षस के समान आचरण करने लगता है। महर्षि व्यास ने लिखा है 'सर्वप्राणियों के प्रति दया का भाव रखना ही ईश्वर तक पहुँचने का सबसे सरल मार्ग है।'

दया कोमल स्पर्श का भाव है, कष्ट-पीड़ा से व्यथित व्यक्ति के मन को सुखकारी लेप सा सुकून देता है। दया, करुणा, संवेदना, रहम, सहानुभूति आदि समानार्थी शब्दों का भाव एक ही है। यह मानवीय गुण हैं, जो सभी में निहित है, लेकिन प्रभु श्री राम दया के, प्रेम के, अगाध भण्डार हैं। तुलसी कृत रामचरितमानस के अरण्यकाण्ड में जब गृद्धराज जटायु को जीवन और मृत्यु के मध्य संघर्ष करते देखा उनका मन दया से भर गया और उन्होंने बड़ी आत्मीयता से अपने हाथों से जटायु के सिर का स्पर्श किया। राम का सुखद स्नेह पाकर जटायु ने पीड़ा से भरी अपनी आँखें खोल दी। दया के सागर प्रभु श्री राम को देखकर उसकी सारी पीड़ा स्वतः दूर हो गई। जटायु ने सीता मैया की रक्षा में अपने प्राण त्याग दिये। कृतज्ञता, सम्मान और स्नेह की भावना से ओतप्रोत प्रभु श्री राम ने जटायु को पितृतुल्य सम्मान देते हुए उनका दाह संस्कार करते हैं, गोदावरी की पवित्र धारा में जलांजलि समर्पित करते हैं। श्री राम का अपने भक्तों-सेवकों पर सदैव अनुपम स्नेह रहा। राम का स्नेह व उनकी कृपा अनन्त साधना और वर्षों की तपस्या से भी सुलभ नहीं हो पाती। लेकिन छल से रहित निर्मल मन वाले जन के हृदय में सदैव प्रभु बसते हैं, एक स्मरण मात्र से वे दौड़े चले आते हैं।

सरसिज लोचन बाहु बिसाला। जटा मुकुट सिर उर बनमाला॥
स्याम गौर सुंदर दोउ भाई। सबरी परी चरन लपटाई।
प्रेम मगन मुख बचन न आवा। पुनि पुनि पद सरोज सिर नावा॥
सादर जल लै चरन पखारे। पुनि सुंदर आसन बैठारे॥

कमल सदृश नेत्र और विशाल भुजाओं वाले, सिर पर जटाओं का मुकुट और हृदय पर वनमाला धारण किए हुए सुंदर, साँवले और गोरे दोनों भाइयों के चरणों में शबरी जी लिपट पड़ीं, प्रेम में अत्यंत मग्न हो गईं, मुख से कोई भी वचन नहीं निकले। पैर पखारकर सुंदर आसनों पर बैठाया और मीठे मीठे स्वादिष्ट कन्द, मूल फल लाकर दिए। राम ने अत्यंत प्रेमभाव से बार-बार प्रशंसा करके उन फलों को बड़े आनंद और स्नेह से खाया। पौराणिक संकेतों में लिखा है कि शबरी शबर नामक जातिविशेष के लोग दक्षिणापथवासिनः शाप के

कारण म्लेच्छ बन गए थे। उनका समाज नीचा स्थान था, लेकिन राम दया और करुणा के अनन्त भण्डार हैं। शबरी की सेवा समर्पण भक्तिभाव से राममय हो गई और राम ने शबरी को ऋषि मुनियों को प्राप्त होने वाला स्थान दिया।

प्रभु की सेवा में समर्पित, नौका यापन में कर्मरत निर्मल मन वाला केवट राम की अनमोल भक्ति में प्रसन्न है उसके लिए धन वैभव स्वरुप अंगूठी का कोई मोल नहीं है। गंगा पार कराने पर सीता जी के द्वारा भेंट की गई अंगूठी वह स्वीकार नहीं करता है। राम के स्नेह का भाजन केवट हाथ जोड़कर कहता है कि-

नाथ आजु मैं काह न पावा। मिटे दोष दुख दारिद दावा॥
बहुत काल मैं कीन्हि मजूरी। आजु दीन्ह बिधि बनि भलि भूरी॥

केवट बोला हे नाथ! आज मैंने क्या नहीं पाया अर्थात मुझे तो आज सब कुछ मिला गया है! आपके दर्शन मात्र से मेरे दोष, दुःख और दरिद्रता की आग आज बुझ गई है। मैंने बहुत समय तक मजदूरी की पर आज विधाता ने बहुत अच्छी भरपूर मजदूरी दी है, अनंत काल के परिश्रम के बाद आज मुझे फल प्राप्त हुआ है।

अब कछु नाथ न चाहिअ मोरें। दीन दयाल अनुग्रह तोरें॥
फिरती बार मोहि जो देबा। सो प्रसादु मैं सिर धरि लेबा॥

हे नाथ! हे दीनदयाल! आपकी कृपा से अब मुझे कुछ और नहीं चाहिए। लौटती बार आप मुझे जो कुछ देंगे, वह प्रसाद शिरोधार्य होगा।

राम की दया का एक प्रसंग मूढ़ मति जयन्त का है जो इन्द्र का पुत्र है और राम के बल को जानना चाहता है। जो सारे संसार के नियन्ता है उन्हें परखने की इच्छा से राम सीया के मध्य आकर धीरे से सीताजी के चरण कमलों पर चक्षु से प्रहार कर भाग जाता है। जयन्त का यह दुष्कर्म राम को नहीं भाता और उसे डराने के उद्देश्य से सींक के बाण का प्रयोग करते हैं।

सीता चरन चोंच हति भागा। मूढ़ मंदमति कारन कागा॥
चला रुधिर रघुनायक जाना। सींक धनुष सायक संधाना॥

रघुनाथजी के प्रेम को सारा संसार भली भांति जानता है, राम का निश्छल प्रेम सभी के लिए समान था। वह अत्यन्त ही कृपालु थे, दीन दुखियों के दुख को देखकर उनका हृदय द्रवित हो जाता था। उनका प्रेम सब पर सदा रहता है, चाहे गुणी हो या अवगुणी, मूर्ख हो या ज्ञानी, सब के लिए सहृदयी थे। मूर्ख जयन्त ने आकर छल किया फिर भी राम ने उसे मारा नहीं। जब उसे अपनी करनी पर पश्चाताप हुआ तब श्री राम उसे छोड़ देते हैं। यह उनका दया से परिपूर्ण हृदय था जो अपराधी के अपराधों को भी क्षमा दान देता है।

अति कृपाल रघुनायक सदा दीन पर नेह।
ता सन आइ कीन्ह छलु मूरख अवगुन गेह॥

राम जी का हनुमानजी पर सदैव पुत्रवत स्नेह रहा,जब से हनुमानजी राम के साथ आये तब से वे राम के ही हो गए उनके रोम-रोम में राम बस गए। राम भी हनुमानजी को पुत्र के समान अटूट प्रेम और विश्वास करते थे। जब अशोक वाटिका से सीता जी का संदेश लेकर आऐ

हनुमान जी को देखकर बड़े स्नेह से राम कहते हैं कि- *सुन सुत तोहि उरिन मैं नाहीं। देखेऊँ कर विचार मन माँहीं ।।*

राम के हृदय में प्रजा के लिए सदैव असीम प्रेम रहा, राम के प्रेम के उदधि में प्रजा ने खूब गोता लगाया, खूब आनंद उठाया। प्रजा की हर बात को बड़े स्नेह और धैर्य के साथ सुनना, हर समस्या का समाधान पितृतुल्य करना राम के स्वभाव में था। राम ने जन-जन के हृदय में स्थित होकर प्रेम स्नेह दया भाई चारे की सद्भावना को सदैव सुवासित किया। आज भी राम के अनुयायी, राम भक्त, राम कथा के रसिक, सदैव दया, प्रेम, भाई-चारा और स्नेह का भाव कायम रखते हैं।

यह जानकर आत्मिक प्रसन्नता हुई कि आपके द्वारा 'राम जिज्ञासा' नामक पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। इस हेतु मेरी बधाई स्वीकार करें। 'राम जिज्ञासा' अपने उद्देश्य में सफल हो और विश्व भर में प्रभु श्री राम व रामायण के पवित्र संदेशों को जन-जन तक पहुंचा कर नवीन चेतना का संचार करे, ऐसी मेरी कामना है।

सुबोध श्रीवास्तव, सहायक संपादक,'आज' (हिन्दी दैनिक), कानपुर

'राम जिज्ञासा' के प्रथम अङ्क के प्रकाशन के शुभ अवसर पर मैं हर्षित भी हूँ और आशान्वित भी। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र के जीवन चरित्र, आदर्शों व उनसे प्राप्त शिक्षाओं के प्रचार-प्रसार के कार्य में पत्रिका अपना सार्थक योगदान दे व सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन में सहयोगी बने, ऐसी कामना है। पूरे पत्रिका परिवार को शुभ कामनाएँ प्रेषित करती हूँ। आयोजन की सफलता की भी आकांक्षी हूँ।

डॉ. कविता वाचक्नवी, ह्यूस्टन, अमेरिका

राम के जीवन से मिलने वाली प्रेरणाओं को, संसार के कोने-कोने में पहुँचाने का, हर व्यक्ति के जीवन को प्रेरित करने के लिए, जो अथक परिश्रम आप लोगों की 'RamQuest" टीम ने किया है और निरन्तर कर रहे हैं, वह अति सराहनीय है। इस सजग एवम् अनवरत प्रयास के लिए आप सभी लोग असीम स्नेह, धन्यवाद और साधुवाद के पात्र हैं। विश्व में, पुरुषोत्तम के प्रेरणा रथ को 'राम जिज्ञासा' पत्रिका के माध्यम से आगे बढ़ाने के लिए एवम् रामायण अन्तर्राष्ट्रीय अधिवेशन, जयपुर के सफल आयोजन के लिए ढेरों शुभकामनाएं।

डॉ. रामा तक्षक, नीदरलैंड्स

मेरा सर्व प्रिय ग्रंथ तुलसी कृत रामायण पूरे भारतवर्ष में हिंदू व सनातन धर्मी लोगों को को श्रद्धा के साथ बाँधे हुये है। इसका जितना भी प्रचार व प्रसार, किसी भी रूप में हो उतना ही अच्छा है। 'राम जिज्ञासा' इस कार्य में सफल प्रयास है, जो अब अँग्रेजी के साथ साथ हिंदी में भी प्रकशित हो रही है। मुझे आशा है लोग इसके प्रसारण में सहायक होंगे।

हरि बिंदल, लेखक, कवि, अमेरिका

मानस के अरण्यकाण्ड में भक्ति का सन्दर्भ

डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम'

डॉ० नरेंद्र शर्मा 'कुसुम' अवकाशप्राप्त प्रोफेसर हैं। वे एक सुप्रसिद्ध कवि, लेखक, साहित्य समीक्षक व अध्येता हैं। उन्होने 22 से भी अधिक पुस्तकें हिन्दी और अंग्रेजी में लिखी हैं। वे अनेक शैक्षिक, सामाजिक,धार्मिक व साहित्यिक संस्थाओं से जुड़े हैं। उनको कई संस्थाओं व संगठनों ने पुरस्कृत तथा सम्मानित किया है। अभी हाल ही में राजस्थान साहित्य अकादमी ने उन्हे 'विशेष साहित्याकार' सम्मान दिया है। डॉ० कुसुम तुलसी मानस संस्थान के उपाध्यक्ष एवं तुलसी सौरभ पत्रिका से सम्बद्ध स्थायी समीक्षक हैं।

कहना न होगा कि 'भक्ति' की अवधारणा मानव के उद्भव के साथ जुड़ी हुई है। वह उतनी ही सनातन है जितनी की मानवीय संस्कृति। भारत में तो 'भक्ति' हमारी प्राणवायु ही रही है, हमारे भौतिक जीवन का आधार रही है। अपने देश में ही क्या, विश्व के प्रत्येक भूखण्ड में भक्ति किसी न किसी रूप में सदैव विद्यमान रही हैं। चाहे वह ईश-भक्ति हो अथवा स्वामी-भक्ति। देश-भक्ति, मातृ-भक्ति, पितृ-भक्ति और गुरु-भक्ति आदि भारत की पहचान रही हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि 'भक्ति' मानव की महीयसी परम्परा का अभिन्न अंग रही है। क्योंकि वह वैश्विक मानवीय-परम्परा के साथ जुड़ी रही है, उसकी चर्चा विभिन्न शास्त्रों, पुस्तकों और धार्मिक ग्रन्थों में अवश्य मिलेगी। भारत में तो भक्ति विषयक विपुल साहित्य उपलब्ध है। भागवत और गीता में भक्ति की विस्तृत चर्चा है। यहाँ हम 'भक्ति' पर विस्तृत चर्चा न करके 'रामचरित मानस' के अरण्यकाण्ड में प्रस्तुत 'भक्ति' के स्वरूप पर विचार करना चाहेंगे। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि 'भक्ति' संस्कृत के 'भज्' धातु से सम्बद्ध है जिसका अर्थ है: सेवा करना। इसमें 'क्ति' प्रत्यय लगा कर 'भक्ति' शब्द बना है। 'क्ति' से आशय हैं: प्रेम। इस प्रकार 'भक्ति' 'भज्' (सेवा)' तथा 'क्ति' (प्रेम) का समन्वय है। संभवत: सेवा को मानसिक, आध्यात्मिक आधार देने के लिए उसमें प्रेम भावना की नियोजना की गई, अन्यथा सेवा स्वयं में सर्वोपरि गुण नहीं हैं क्योंकि उसके प्रयोजन अनेक हो सकते हैं। दरअसल, भक्ति मूलत: एक भाव-बोध अथवा मानसिक-आध्यात्मिक प्रक्रिया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार 'धर्म का रसात्मक पक्ष उपासना अथवा भक्ति है।' भक्ति के सैद्धान्तिक पक्ष पर अनन्त विमर्श हो सकता है पर यहाँ पर हम 'अरण्यकाण्ड' में विवेचित 'भक्ति' के बारे में संक्षेप में विचार कर रहे हैं।

भक्ति का मुख्य विवेचन भागवत में 'नवधा' भक्ति नाम से प्रसिद्ध है। प्रह्लाद हिरण्यकशिपु से उसका उल्लेख करते हुए कहते हैं कि विष्णु भगवान की भक्ति के नौ भेद हैं (7/5/23)।

श्रवणं कीर्तनं विष्णौ: स्मरणं पाद सेवनम्।
अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्म निवेदनम्॥

भागवत में वर्णित 'नवधा भक्ति' पर्याप्त सुपरिचित एवं लोकप्रिय है। पर 'मानस' के अरण्यकाण्ड में शबरी प्रसंग में प्रस्तुत 'भक्ति' के नौ प्रकारों के बारे में 'मानस' के पाठकों का

ध्यान संभवत: कम ही जाता है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम के मुखारविन्द से नि:सृत यह विवेचन अत्यन्त पुनीत है और 'भक्ति' की अवधारणा को समग्रता से प्रस्तुत करता है। भक्तवत्सल करुणा निधान भगवान श्री राम प्रीति की रीति को भलीभाँति जानते हैं। वे अन्य संबंधों को छोडक़र केवल प्रेम और भक्ति का ही संबंध मानते हैं:-

जानत प्रीति-रीति रघुराई।
नाते सब हाते करि राखत राम सनेह सगाई। (विनय पत्रिका)

अरण्यकाण्ड में भक्तिमती शबरी का प्रसंग 'भक्ति' के नौ प्रकारों को प्रस्तुत करता है इसलिए इसे भी 'नवधा भक्ति' ही कहा जाएगा। सीताजी की खोज करते हुए जब श्री राम और लक्ष्मण तपस्विनी शबरी के आश्रम में पहुँचे तब वे दोनों भाईयों को देखकर उनके चरणों में लिपट गईं। उनके हृदय में प्रेम का सागर उमड़ पड़ा। वे आनंद मग्न हो गईं। उनके मुख से वचन नहीं निकल सके: 'प्रेम मगन मुख वचन न आवा। पुनि पुनि पद सरोज सिर नावा॥'

भाव विभोर शबरी भक्ति और प्रेम में आकंठ डूब रही थी। भक्ति की यही तल्लीनता, अनन्यता उसकी पराकाष्ठा है। भगवान तो अंतर्यामी है, भक्त के बिना बोले ही वे सब समझ जाते हैं। श्री राम शबरी से बोले: ''मानउँ एक भगति कर नाता''। वे तो केवल भक्ति का ही संबंध मानते हैं। क्योंकि 'भक्ति' ही मनुष्य का सर्वोपरि गुण हैं:

जाति पाँति कुल धर्म बड़ाई। धनबल परिजन गुण चतुराई।
भगतिहीन नर सोहइ कैसा। बिनु जल बारिद देखिअ जैसा॥

जाति, पाँति, कुल धर्म, बड़ाई, धन, बल, कुटुम्ब, गुण और चतुरता-इन सबके होने पर भी भक्ति से रहित मनुष्य कैसा लगता है, जैसे जलहीन बादल (शोभाहीन) दिखाई पड़ता है।

भगवान राम शबरी को 'नवधा भक्ति' का मर्म बताते हैं।

नवधा भगति कहउँ तोहि पाहीं। सावधान सुनु धरु मान माहीं॥
प्रथम भगति संतन्ह कर संगा। दूसरि रति मम कथा प्रसंगा॥
गुर पद पंकज सेवा तीसरि भगति अमान।
चौथि भगति मम गुन गन करइ कपट तजि गान॥
मंत्र जाप ममदृढ़ बिस्वासा। पंचम भजन सो बेद प्रकासा॥
छठ दम सील बिरति बहु करमा। निरत निरन्तर सज्जन धरमा॥
सातवँ सम मोहि मय जग देखा। मोतें संत अधिक करि लेखा॥
आठवँ जथालाभ संतोषा। सपनेहुँ नहि देखइ परदोषा॥
नवम सरल सब सन छलहीना। मम भरोस हियँ हरष न दीना॥

भगवान राम भक्ति के नौ स्वरूपों के बारे में शबरी को समझाते हैं, पर वे इतने उदार हैं कि वे इन नौ गुणों की अपेक्षा प्रत्येक भक्त से नहीं करते। वे प्रत्येक व्यक्ति की सीमा को पहचानते हुए कहते हैं: यदि ये सब गुण एक भक्त में न मिलें तो कोई बात नहीं। वे कहते हैं-'नव महुँ एकउ जिन्ह के हौई। नारि पुरुष सचराचर कोई॥' भगवान राम की भक्ति तो बस समर्पण चाहती है। भक्त तो भगवान से तदाकार और तदात्मय स्थापित कर ले, सेवा और प्रेम का अबलम्ब लेकर भक्ति में डूब जाए, यही भक्ति का चरमोत्कर्ष है।

अरण्यकाण्ड में शबरी के प्रसंग में आई भगवान श्री राम के मुखारविन्द से प्रसूत भक्ति-चर्चा का क्या कोई आधुनिक संदर्भ हो सकता है ? क्यों नहीं हो सकता ? आज के नैतिक और आध्यात्मिक-पराभव के दौर में, सन्तों की संगति की क्या जरूरत नहीं है ? क्या भगवान के उदात्त गुणों का अनुसरण हमारे युग की आवश्यकता नहीं है ? गुरुभक्ति क्या आज अप्रासंगिक है ? क्या मन की निर्मलता व्यष्टि और समष्टि की निर्मलता में प्रतिफलित नहीं होनी चाहिए ? निर्मल, छद्मुक्त मन से अपनाए गए लोक मंगलकारी मंत्र-जाप क्या श्रेयस्कर नहीं हैं ? क्या वेद-ज्ञान, इन्द्रिय-संयम अर्थहीन हैं ? क्या 'सियाराम मय सब जग जानी' का भाव निस्सार है ? क्या संत उपेक्षणीय हैं ? क्या संतोष व्यर्थ है ? क्या परदोष दर्शन अहितकर नहीं होता ? क्या सरलता, ऋजुता और प्रभु में अटल विश्वास की आज के अनास्थावादी संसार को जरूरत नहीं है ?

हमें अपने धार्मिक ग्रन्थों और प्रसंगों को मनोयोग से पढ़ना चाहिए। इन्हें केवल कोरे किस्से मानकर नहीं छोड़ देना चाहिए। इनमें जीवन का मर्म छिपा है। गोस्वामी तुलसीदास तो एक मंत्रदृष्टा ऋषि थे, त्रिकाल कवि थे, इसलिए इनके 'मानस' की प्रत्येक पंक्ति अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने की क्षमता रखती है। इति शुभमस्तु।

श्री रामचरितमानस शब्द ज्ञान

ओमप्रकाश गुप्ता

निम्न शब्द श्री रामचरितमानस ले गए हैं। हर शब्द के अर्थ के चार विकल्प हैं। जो विकल्प सही हो उसे अंकित करें।

1. गाधि
   - a. मादा गधा
   - b. गद्दी
   - c. विश्वामित्र के पिता
   - d. आधा/आधी

2. नृप
   - a. साँप
   - b. राजा
   - c. पूजा
   - d. नदी का नाम

3. ऋष्यमूक
   - a. एक मूक ऋषि का नाम
   - b. एक विद्वान ऋषि का नाम
   - c. एक पर्वत का नाम
   - d. क्रोधित व्यक्ति

4. ससि
   - a. उज्जवल
   - b. चन्द्रमा
   - c. दशरथ के पिता
   - d. सूर्य

5. जठर
   - a. दृढ
   - b. पति के बड़े भाई
   - c. पेट
   - d. एक पौधा

इस स्तम्भ के प्रश्न भेजने के आप लिए आमंत्रित है। उचित प्रश्नों को आपके नाम के साथ राम जिज्ञासा में प्रकशित किया जायेगा। (email: jigyasa@ramacharit.org)

नाथ कहिअ हम केहि मग जाहीं

रामलक्ष्मण गुप्त

प्रो. रामलक्ष्मण गुप्त शिक्षा, अध्यात्म एवं संस्कृति के क्षेत्र में एक सुपरिचित नाम है। एक अंग्रेजी प्राध्यापक के रूप में अपनी जीवन वृत्ति प्रारम्भ करने वाले कालांतर में उद्योग-प्रबंधन से जुडऩे वाले श्री गुप्त तुलसी मानस संस्थान के अध्यक्ष एवं संस्थान की द्विमासिक पत्रिका तुलसी सौरभ के संपादक हैं। संस्थान के माध्यम से उन्होंने अनेक साहित्यिक एवं सांस्कृतिक पुस्तकों का प्रकाशन किया है। सांस्कृतिक विषयों में उनकी गहरी रुचि है और संस्कृति के पुष्पन, पल्लवन एवं संरक्षण में वे विशेष रूप से प्रयासरत रहते हैं।

विषय पर चिन्तन करने से पूर्व हम उस प्रसंग की ओर चलते हैं जहाँ से यह विचारणीय विषय लिया गया है। पिता द्वारा वनवास की आज्ञा होने के पश्चात् श्रीराम, लक्ष्मण एवं जानकी जी प्रयागराज में मुनि श्रेष्ठ भरद्वाज जी के आश्रम में रात्रि विश्राम कर प्रात: अपनी आगे की यात्रा करने से पूर्व श्री राम पूछ रहे हैंकि वे किस मार्ग से जाए- 'राम सप्रेम कहेउ मुनि पाहीं। नाथ कहिअ हम केहि मग जाहीं॥' और तब मुनि श्रेष्ठ ने कहा- 'मुनि मन बिहसि राम सन कहहीं। सुगम सकल मग तुम कहुँ अहहीं॥'

सामान्य दृष्टि से देखें तो यही समझ में आयेगा कि रामजी मुनि महाराज से रास्ता पूछ रहे हैं और मुनि जी कह रहे हैं कि चाहे जिस रास्ते से जाइये, आपके लिए तो सभी रास्ते सुगम हैं। पर लोक व्यवहार में बिना मंजिल बताये कोई रास्ता कैसे पूछेगा ? गन्तव्य बताने के बाद ही मार्ग पूछा जाता है और मार्ग बताने वाला भी बिना गन्तव्य के बारे में पूछे कह रहा है कि आपके लिये सभी रास्ते सुगम हैं, चाहे किसी से भी चले जाइये। यहाँ दो बातें उभर कर आती हैं। एक, शायद पूछने वाला मार्ग केवल इसीलिए पूछ रहा हो ताकि मार्ग बताने वाला मार्ग तो बता ही दे और मंजिल भी सुनिश्चित कर दे। दूसरा, यह कि जिससे रास्ता पूछा गया है वह पहले से ही मंजिल के बारे में, गन्तव्य के बारे में जानता हो। यहाँ दूसरी बात कुछ अधिक सही प्रतीत होती है। मुनि भरद्वाज को राम के बारे में सब कुछ विदित है। याज्ञवल्क्य-भरद्वाज प्रसंग में हम यह सब पहले ही पढ़ चुके हैं।

जागबलिक बोले मुसकाई। तुम्हहिं बिदित रघुपति प्रभुताई॥

भरद्वाज जी राम के ऐश्वर्य को जानते हैं। उन्हें पता है राम कौन सा रास्ता पूछ रहे हैं और उनका गन्तव्य क्या है। वह यह भी जानते है कि उनके (राम) लिए तो सारे मार्ग सुगम हैं। वह मन ही मन हँसते है कि सभी रास्तों को जानने वाले आज जाने का रास्ता पूछ रहे हैं।

यह तो स्पष्ट है कि रामजी धरती पर बनाये गये किसी ऐसे रास्ते के बारे में नहीं पूछ रहे जिसे आवागमन के लिए प्रयोग में लाया जाता है। तो फिर वह कौन सा रास्ता पूछ रहे हैं और जब उनके लिए सभी रास्ते सुगम हैं तो फिर किसी रास्ते विशेष के बारे में उन्होंने क्यों जानना चाहा है? यहाँ संकेत जिस मार्ग विशेष का है वह मार्ग जीवन में अपनाने योग्य मार्ग है। वह कौन सा मार्ग है जिसे अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए अपनाया जाये? तो क्या ब्रह्म के अवतार को किसी मार्ग के जानने की आवश्यकता है? उसके लिए तो सभी मार्ग सुगम हैं, वह सभी मार्गों

का निर्माता और ज्ञाता है। फिर मार्ग बताने का आग्रह क्यों? निश्चय ही अवतार रूप में ब्रह्म मानव मात्र के लिए ही रास्ता तय करने हेतु सचेष्ट दिखाई दे रहा है। मुनिश्रेष्ठ उस मार्ग का निर्देश करने में सक्षम है। पर मुनि महोदय ने तो कोई रास्ता नहीं बताया। रास्ता बताने के लिये उन्होंने अपने शिष्यों को बुलाया- 'साथ लागि मुनि शिष्य बोलाये। सुनि मन मुदित पचासक आये॥

व्याख्याकारों का कहना है कि इन 50 शिष्यों के रूप में 4 वेद, 4 उपवेद, 18 पुराण, 18 उपपुराण, 6 शास्त्र, कुल मिलाकर 50, स्वयं उपस्थित हुए थे। इस प्रकार शास्त्रों में बताये गये सभी मार्ग उपलब्ध थे और उनमें से प्रत्येक का दावा था कि उसका मार्ग अच्छी तरह से देखा हुआ है, यानि वही सही मार्ग जानता है- *'सबहिं राम पर प्रेम अपारा। सकल कहहिं मगु दीख हमारा॥'*

कहते है मुनि देव ने चार शिष्यों (वेदों) को साथ कर दिया। मार्ग बताने को पर मुनि ने गन्तव्य का कोई संकेत नहीं दिया। उन्होंने तो गुरु वाल्मीकि के पास श्री रामजी को पहुँचाने भर की व्यवस्था कर दी और आगे की बात अपने गुरु वाल्मीकि पर छोड़ दी। वाल्मीकि के आश्रम में पहुँच कर रामजी ने रहने के स्थान के बारे में पूछा-

अस जिय जानि कहिअ सोइ ठाउँ। सिय सौमित्र सहित जहँ जाऊँ॥

अपने ठहरने के स्थान के बारे में जिज्ञासा की है। मुनि महाराज कहते हैं:

पूछेहु मोहि कि रहों कहँ, मैं पूछत सुकचाउँ।
जँह न होहु तहँ देहु कहि, तुम्हहिं देखावऊँ ठाउँ॥

मार्ग और गन्तव्य दोनों जिसमें निहित हों उसे कौन सा मार्ग दिखाया जाय और कौन सा गन्तव्य बताया जाय ? फिर भी मुनिवर ने ऐसे चौदह स्थान बताये जहाँ श्री राम सौमित्र व जनक नन्दिनी के साथ रह सकते हैं। ये निवास स्थान भौतिक जगत में निर्मित भवनों में दिखाई नहीं देते। यह सब तो अध्यात्म जगत् के भवन हैं। और इन सब का फल क्या होना चाहिये ? रामजी के चरणों में प्रेम-

सबु करि मांगहिं एक फलु, राम चरन रति होउ।
तिन्हकें मन मंदिर बसहु, सिय रघुनन्दन दोउ॥

जहाँ अनन्य भक्ति हो, वहीं निवास हो। भक्ति ही का मार्ग एक मात्र मार्ग हो सकता है, होना चाहिये। जो भगवान को ही अपना सर्वस्व माने। 'स्वामि सखा पितु-मातु गुरु, जिन्ह के सब तुम तात' और 'जाहि न चाहिए कबहुँ कछु, तुम सन सहज सनेहु' ऐसे अनन्य भक्तों का मार्ग ही एक मात्र मार्ग स्वीकार करने योग्य

दिखाई देता है।

रामचरित मानस में यद्यपि भगवत्प्राप्ति को ही मानव मात्र का गन्तव्य माना है और अनन्य भक्ति को सर्वोपरि रखा है तथापि वेद-शास्त्रों में वर्णित सभी मार्गों को स्थान दिया गया है। युग युगान्तर से यह प्रश्न कि मनुष्य को कौन सा मार्ग अपनाना चाहिए मानव मस्तिष्क को मथता रहा है। उत्तर प्राप्त करना सरल नहीं रहा है। गीताकार ने कहा- 'किं कर्म किं अकर्मेति कवयोऽप्यत्र मोहिता:।' बड़े-बड़े ज्ञानी-पण्डितजन इस दिशा में चिन्तन करते रहे हैं पर मोह से ग्रसित होकर रह गये। सही मार्ग नहीं बता पाये। भगवान कृष्ण ने भी 18 अध्यायों में दिये गये अपने उपदेश के बाद यही कहा-

सर्व गुह्यतमं भूय: श्रृणु मे परमं वच:।

* *

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।

* *

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।

शबरी को नवधा भक्ति समझाते हुए यही तो श्रीराम कह रहे हैं- 'मम दरसन फल परम अनूपा। जीव पाव निज सहज सरूपा ॥' जीव का लक्ष्य भी अपना सहज सरूप पाना है और उसके लिए है सरलतम, सुगमतम, सफलतम मार्ग भक्ति मार्ग।

राम-चरित सन्देश

मंगलेश मुजमेर 'मंगल'

श्री मंगलेश मुजमेर 'मंगल' जी ने करीब ७० साहित्यिक रचनाएँ प्रकाशित की हैं। आकाशवाणी और कई कवि सम्मेलनों में उन्होंने काव्य-पठन भी किया है। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं और संस्थाओं ने समय-समय पर कई पुरस्कार मिले हैं।

रंक और राजा, में न द्वेष है;
'राम-राज' में, नहीं क्लेश है।

बुरे का होता है, अंत बुरा ही;
सबको ये कहता, 'लंकेश' है।

'रघु-कुल' रीत, निभाने हेतु;
रखा 'राम' ने, साधु-वेश है।

धर्म के हित में, करें युद्ध भी;
दिया ये 'राम' ने, निर्देश है।

'राम-चरित' में, हर दर्शन है;
जग का रहा, कुछ न शेष है।

हर मोड़ पे, जीवन कैसा हो?
'राम-चरित' में, यही विशेष है।

'राम-कृष्ण' की, संस्कृति को;
मानते अब, पश्चिमी देश हैं।

'राम' के जीवन, -मूल्य सहेजें;
ये 'राम-चरित' का, सन्देश है।

तैरते 'मंगल', हैं वजनी पत्थर;
'राम-नाम' से, 'गर वे लैश हैं।

राम से इकतरफा संवाद

वन्दना गुप्ता

वंदना गुप्ता एक गृहणी हैं जिनकी कहानी, कविता और उपन्यास मिलाकर कुल 10 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। कृष्ण पर तीन काव्यात्मक किताबें भी प्रकाशित हो चुकी हैं। यद्दपि इनका रुझान अध्यात्म की तरफ है वे अपनी दृष्टि से विश्लेषणात्मक अध्ययन करती हैं, फिर प्रश्न रूप में ही क्यों हो न वे ईश्वर को कटघरे में खड़ा कर देती हैं।

राम तुम्हारा जन्म लेना वास्तव में प्रतीक है सद्भावनाओं और मर्यादा के जन्म का। देखो कितनी धूमधाम से मनाते हैं सब बिना जाने तुम्हारे जन्म के महत्त्व को। सुनो, खुश तो हो जाते होंगे न इस तरह मनाने पर ? आहत तो नहीं होते न देख कर, यहाँ कैसे होता है मर्यादाओं का हनन। सुनो राम! तुम सिर्फ अवतार थे, अवतार हो और अवतार ही रहोगे क्योंकि यहाँ सिर्फ अवतार पूजे जाते हैं, अवतारों के बताये रास्तों पर चला नहीं जाता और सीख लो तुम भी इसी तरह खुश रहना। तुम्हारा जन्मदिन मनाने का सिर्फ इतना ही औचित्य है कि हम सिद्ध कर सकें खुद को राम भक्त, वैसे चाहे रोज मर्यादा और सद्भावना का चीरहरण करते रहें। तुम महज खिलौना भर हो हमारे लिए। आज का इंसान बहुत प्रैक्टिकल हो चुका है। पता तो होगा न ? और फिर जन्मदिन मनाने के लिए जरूरी तो नहीं तुम्हारे बताये आदर्शों पर चलना। सुना है जब तुम्हारा अवतरण हुआ था धरा पर ऋतुएँ अनुकूल हो गयी थीं। चहूँ ओर उल्लासमय वातावरण छा गया था। हर हृदय परमानन्द में मगन हुआ जैसे तुमने उनके ही आँगन मे जन्म लिया हो। मगर आज सोचती हूँ राम, कैसे होगा तुम्हारा अवतरण धरा पर, जहाँ नर पिशाचों का डेरा लगा है। कहीं ना कोई महफ़ूज़ रहा है, नारी की अस्मिता तार-तार हुयी है। सिर्फ़ और सिर्फ़ खौफ़ का साया तांडव कर रहा है। मानसिकता पर कालिख पुती हुयी है। बस वासना और हैवानियत का नंगा नाच हो रहा है। रक्षक ही भक्षक बन नोंच रहे हैं। अत्याचार ही अत्याचार हो रहे हैं। हे राम! क्या ले सकोगे जन्म इन हालात में ? हे राम! क्या कर सकोगे स्थापित फिर से मर्यादायें जीवन में ? हे राम! ये दिन में छायी काली अँधियारी है। क्या मिटा सकोगे इसका नामोनिशान फिर से जन्म लेकर या फिर तुम भी अब यहाँ आने से हिचकते हो जहाँ मर्यादायें, विश्वास और सम्मान पर तुषारापात होता हो। हे राम! आज जरूरत है तुम्हारी। मगर मैं सोच में हूँ तुम्हें तो आदत है ऋतुओं के अनुकूल होने पर ही आगमन की। क्या इस बार बिना किसी शोर शराबे के, बिना तुम्हारे आगमन की पूर्व सूचना के हो सकेगा तुम्हारा अवतरण? क्या कर सकोगे तुम ऐसा...नर पिशाचों के बीच जन्म लेकर कर सकोगे धनुष की टंकार और कर सकोगे अपने उदघोष को सार्थक ....

जब जब होये धर्म की हानि, बाढहिं असुर महा अभिमानी ॥
तब तब प्रगट भये प्रभु राम, पतित पावन सीता राम ॥

या

यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ॥
अभ्युत्थानंधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम ॥

फिर बस हम मनाते रहें प्रतीक स्वरूप तुम्हारा जन्म राम नवमी को । चाहे अन्दर बेबसी, विवशता का एक दावानल सुलग रहा हो आज के रावणों से त्रस्त होकर । या तुम खुश हो इन हालातों को देखकर, प्रतीक स्वरूप राम नवमी मनाये जाने को देखकर, इसलिये नहीं होता अब तुम्हारा अवतरण धरा पर । हे राम ! तुमसे ये प्रश्न तुम्हारे जीव पूछ रहे हैं । अगर दे सको जवाब तो जरूर देना ....हम इंतज़ार में हैं ।

ये दशा है आज के इंसान की, तुम्हारे भक्तों की जो त्रस्त हैं, आहत हैं । वैसे एक बात कहूँ, परिस्थितियाँ अनुकूल हैं तुम्हारे जन्म के लिए । जब जब पृथ्वी पर अधर्म का भार बढ़ा तुमने जन्म लिया तो बताओ तो जरा इस बार क्या हुआ? क्या आज की दयनीय परिस्थितियों से तुम वाकिफ नहीं या फिर कलयुग में आने से डरते हो क्योंकि आज के मानव ने त्याग दी है स्वीकार्यता तुम्हारे ईश्वरत्व की ?

राम! जानते हो आज का मानव आँख बंद कर नहीं करता विश्वास । उसे चाहिए प्रमाण । तभी तो कटघरे में खड़ा कर देता है तुम्हें भी और तुम हो जाते हो आहत । कहीं यही तो वजह नहीं तुम्हारे न आने की ? क्या करे ? तुमने सोचा तो था अच्छा करने का लेकिन यहाँ उसका अर्थ ही बदल दिया गया । माफ़ नहीं कर पाए तुम्हें हम निर्दोष सीता की अग्निपरीक्षा के बाद भी त्यागने की तुम्हारी नीति पर । जानते हों क्यों ? क्योंकि तुम राजा भी थे और पति भी । माना तुम राजा पहले थे और पति बाद में लेकिन प्रश्न यहीं उठता है । क्या राजा पहले बने थे ? यदि नहीं, तो पहला धर्म पत्नी का हर हाल में साथ देना चाहिए था तुम्हें । तुम राजा बने तो तुम्हारा पहला कर्तव्य प्रजा पालन था तो भी तुम कहाँ सफल हुए ? क्या सीता तुम्हारी प्रजा में शामिल नहीं थी ? क्या उसकी रक्षा का दायित्व तुम्हारा नहीं था ? एक पति ने पत्नी का त्याग किया तो राजा का फर्ज बनता था उसके दायित्व को वहन करना । लेकिन तुम दोनों ही मोर्चों पर असफल रहे, ये बात तुम जानते थे और उसी के प्रायश्चित स्वरुप तुमने खुद को उसी हाल में रखा जिसमे सीता रही लेकिन क्या इतने कर देने भर से हो जाते हो तुम मुक्त उस गुनाह से जिसने पीढ़ियों में रोंप दी विवशताएँ । आज भी घर घर में सीता निष्कासित है । आज भी उसे नहीं मिला उसका स्वर्णिम मृग, सिर्फ और सिर्फ तुम्हारी बिछायी नागफनी के कारण । क्या यही तो कारण नहीं तुम नहीं आते पुनः धरा पर कि देना पड़ा जवाब तो क्या दोगे?

राम तुम आदर्शवादी थे । तुमने राम राज्य स्थापित किया । तुमने मर्यादा का महत्त्व बताया । मानते हैं, तभी आज तक स्वीकार्य हो । लेकिन देखो तो जरा, आज भी तुम्हारे नाम पर कैसे हो रहा है दोहन मर्यादाओं का ? मंदिर-मस्जिद मुद्दे ने गर्म कर रखी है राजनीति । ऐसे में क्या जरूरी नहीं तुम्हारा हस्तक्षेप ? जानते हो न, आज का मानव अपने स्वार्थ के लिए मुद्दों को भुनाना बखूबी जानता है । और जानते हो एक कड़वा सत्य---तुम आज उनके लिए एक मुद्दा भर हो बस । यदि तुम्हारे बताये नियमों पर चला होता तो किसी मंदिर का ख्वाहिशमंद नहीं होता । हर मन में तुम्हें विराजित देख लेता । हर मन तुम्हारा मंदिर बन जाता । कहीं यही तो कारण नहीं, तुम नहीं लेते धरा पर पुनः अवतार ?

ये एक दुखी हृदय के प्रश्न हैं जिससे आज मानवता व्यथित है । चलो राम ! कभी दे सको तो देना मेरे प्रश्नों का जवाब !

एक मनोदशा

प्रतिभा सक्सेना

कानपुर वि.वि. के रीडर पद से सेवानिवृत्त डॉ. प्रतिभा सक्सेना प्रारंभ से ही मौलिक लेखन में सक्रिय रही हैं। उनकी कई कविताएँ, कहानियाँ, निबंध, हास्य-व्यंग्य रचनाओँ के साथ प्रबंधकाव्य एवं उपन्यास प्रकाशित हुए हैं। उनकी रचनाएँ अंतर्जाल स्थित 'कविता कोश' एवं 'गद्य कोश' में भी संकलित हैं। परास्नातक कक्षाओँ को पढ़ाते हुये रामकाव्य धारा में विशेष शोध करते हुये उन्होंने राम-कथा पर आधारित खंडकाव्य 'उत्तर-कथा' तथा अनेक शोधपरक निबंधों एवं कविताओँ की रचना की। प्रतिभा जी केलिफ़ोर्निया (यू.एस.ए.) में अधिकतर निवास करते हुए लेखन में सक्रिय हैं। अंतर्जाल पर उनके दो ब्लाग - 'लालित्यम्'(गद्य) तथा 'शिप्रा की लहरें'(कविता), वर्तमान लेखन से संबद्ध हैं।

काहे राम जी से माँग लिया सोने का हिरन,
सोनेवाली लंका में अब रह ले सिया !

अनहोनी ना विचारी जो था आँखों का भरम,
छोड़ आया महलों को, काहे ललचा रे मन !
कंद-मूल, फल-फूल तुझे काहे न रुचे,
धन वैभव की चाह कहाँ रखी थी छिपा।
सोने रत्नों की कौंध, आँख भर ले, सिया !

वनवास लिया तो भी मन उदासी ना भया,
कुछ माँगे बिना जीने का अभ्यासी ना भया,
मृगछाला सोने की तो मृगतिषणा रही,
तू भी जान दुखी हरिनी के मन की विथा !
कहीं सोने की तू ही न बन जाये री सिया !

घर-द्वार का सपन काहे पाला मेरे मन,
जब लिखी थी कपाल में जनम की भटकन !
छोटे देवर को कठोर वचन बोले थे वहाँ,
अब लोगों में पराये दिन रात पहरा,
चुपचाप यहाँ सहेगी, पछतायेगा हिया !

काहे राम जी से माँग लिया सोने का हिरन,
सोनेवाली लंका में जा के रह ले सिया !

हनुमान जी की सफलता का प्रतीकः सुन्दरकाण्ड

सरोज गुप्ता

डा. सरोज गुप्ता, पं. दीनदयाल उपाध्याय शासकीय कला वाणिज्य (अग्रणी) महाविद्यालय सागर (म.प्र.) हिन्दी विभाग की अध्यक्षा हैं। उन्होंने रामकथा, हिन्दी साहित्य, बुन्देली शब्दकोष, समालोचना और संपादन आदि विधाओं में करीब दो दर्जन ग्रन्थ लिखे हैं। उनके द्वारा अब तक अनेक राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय शोध तथा रामायण सम्मेलनों का सफल आयोजन किया गया है। वे रामकथा की मर्मज्ञ विदुषी और भारतीय मनीषा की प्रतिनिधि संसाधिका के रूप में विज्ञात हैं। उनके निर्देशन में अनेक शोधार्थियों ने महत्वपूर्ण शोध कार्य किये हैं।

श्रीराम की कथा भारतीय जीवनदर्शन, धर्म और संस्कृति के साथ मानव जीवन के विविध पक्षों की ऐसी कथा है जिसमें से उत्कृष्ट सद्गुणों, त्याग, बलिदान, संयम, विवेक व अनुशासन की शिक्षा मिलती है। श्री रामकथा चाहे, महाकवि वाल्मीकि कृत रामायण में, गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा वर्णित रामचरितमानस में या आधुनिक भारतीय एवं पाश्चात्य भाषाओं में रचित हो, सभी में लोक कल्याणकारी भाव के साथ, वैदिक सनातन धर्म और संस्कृति का भव्य व दिव्यरूप पाठकों को मिलता है। सुन्दरकाण्ड में रामकथा कल्पवृक्ष है, कामधेनु के समान है। मानव के पुरूषार्थ चतुष्टय (धर्म, अर्थ, काम मोक्ष) को पूर्णता प्रदान करने वाला जीवन्त काव्य है। आज आवश्यकता है युग के अनुरूप रामकथा के श्रवण, चिन्तन, मनन की, श्रीराम के जीवन चरित को आत्मसात् करने की, समत्व बृद्धि प्राप्त कर श्रेष्ठ कार्यो से जुड़ने की तथा हनुमान जी जैसा असाधारण, अद्भुत बल, वैभव व पराक्रमी बनने की, तभी श्रीराम की कथा का समुचित पारायण हो सकेगा। सुन्दरकाण्ड में तुलसीदास जी ने रामभक्त हनुमान जी के प्रति पूर्ण आत्मनिष्ठा व्यक्त की है। विनयपत्रिका में गोस्वामी तुलसीदास हनुमान जी के प्रति जो अपार श्रद्धा व्यक्त करते हैं, वह सुन्दरकाण्ड में फलीभूत हुई है -

करुणानिधान, बलबुद्धि के निधान मोद, महिमा निधान, गुन-ज्ञान के निधान हौ।
वामदेव रूप, भूप राम के सनेही नाम, लेत देत अर्थ-धर्म काम निरबान हौ।
आपने पधाव, सीतानाथ के सुभाव शील, लोक-वेद-विधि के विदुष हनुमान हौ।
(विनय पत्रिका पद 94-241)

हनुमान जी के प्रति विशुद्ध आत्माभिव्यक्ति प्रदान की है। यही भाव सुन्दरकाण्ड में अभिव्यक्त हुआ है। जिस व्यक्ति में हनुमान जी जैसे गुण विद्यमान होंगे वह व्यक्ति निश्चित रूप से अपने जीवन को सुन्दर बना सकता है। सुन्दरकाण्ड रामभक्त हनुमान की विलक्षण प्रतिभा का प्रतीक है। श्रीराम की अद्भुत कृपा प्राप्त कर हनुमान जी ऐसे-ऐसे अलौकिक कार्य करते हैं, जिससे न सिर्फ हनुमान जी का जीवन धन्य हुआ वरन् हनुमान जी के स्मरण मात्र से जो भी व्यक्ति सुन्दरकाण्ड पढ़ता है, सुनता है, आत्मसात् करता है वह भी विलक्षण प्रतिभावान बन जाता है। सुन्दरकाण्ड जीवन को सुन्दर बनाने की तकनीक से ओतप्रोत जीवन्त कथा है।

जामवन्त की प्रेरणा व श्रीराम के आशीर्वाद से हनुमान जी सीता माता की खोज हेतु आकाश मार्ग से विचरण करते हुए चार सौ कोस के महासमुद्र को लाँघकर मैनाक पर्वत पर छलांग लगाते हैं - 'सिन्धु तीर एक भूधर सुन्दर, कौतुक कूद चढ़ेउ ता ऊपर' वस्तुतः हनुमान जी की छलांग विचार के सर्वोच्च शिखर की छलांग थी। 'गिरि पर चढ़ि लंका तेही देखी' वहाँ से हनुमान जी सोने की लंका देखते हैं। हनुमान जी के मन में वैराग्य जागृत होता हैं, क्योंकि 'सुनहु देव रघुवीर कृपाला, यहि मृग कर अति सुन्दर छाला' - सीता जी सोने के मृग द्वारा ही छली गयी थीं। वैराग्य व आत्मविश्वास के बल से हनुमान जी लंकापुरी जैसी सोने की नगरी में प्रवेश करते हैं। अनन्त बाधाओं को पारकर उन्हें 'भवन एक पुनि दीख सोहावा, हरि मन्दिर तहँ भिन्न बनावा' राम नाम से अंकित दिखाई देता है, साथ ही विभीषण से मित्रता व परिचय होता है। 'मन्दिर महुँ न दीख बैदेही' जब कहीं सीता के दर्शन नहीं होते तब हनुमान जी विभीषण से सीता माता के विषय में पूछते हैं, तब विभीषण सारी युक्ति हनुमान को बताते हैं। विभीषण द्वारा बताई युक्ति को हनुमान जी न सिर्फ सुनते है वरन् प्रत्युत्पन्न मति का परिचय भी देते हैं। राक्षसियों से घिरी सीता की अति दयनीय दशा के दर्शन से दुखी हनुमान तदनुरूप कार्यतत्पर होते हैं, पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं –

कृस तनु सीस जटा एक बेनी, जपति हृदय रघुपति गुन श्रेनी।
निज पद नयन दिए मन, राम पद कमल लीन।
परम दुखी भा पवनसुत, देखि जानकी दीन॥

रावण द्वारा सीता को नाना प्रकार के त्रास देकर इस प्रकार डराना धमकाना और कहना कि - 'मास दिवस महुँ कहा न माना, तौ मैं मारबि काढ़ि कृपाना'। रावण के जाते ही हनुमान का दुखी हृदय सीता के समक्ष 'राम नाम अंकित अति सुन्दर' मुद्रिका फेंकना, सीता से सम्भाषण कर उनकी शरण पाना, भक्तवत्सला माँ सीता के अपार स्नेह को पाकर उनकी आज्ञा से

अशोक वाटिका को उजाड़ना, नगर के प्रमुख भाग को ध्वस्त कर निडरता पूर्वक रावण की सभा में पहुँचना तथा उसे उचित परामर्श देना, आदि कार्य करते हैं। मेघनाद द्वारा बन्धन युक्त करने पर व पूँछ में आग लगने पर स्वर्णमयी लंका को भस्मीभूत कर सीता से चूड़ामणि व आशीष प्राप्त कर, श्रीराम से सीता का सम्पूर्ण वृतान्त विस्तार से बताते हैं, तथा श्रीराम की कृपा प्राप्त करते हैं।

सुन्दरकाण्ड में सीताजी की असाधारण सहनशक्ति, संयम, विवेक, निर्भयता, चरित्र, बल, शीलस्वभाव नारीत्व का चरमोत्कर्ष, जीवन का श्रेष्ठ आदर्श एवं राम के प्रति अनन्य भक्ति स्तुत्य है। सीता जी सभी सुखों का त्याग कर शरीर का ध्यान न रखते हुए श्रीराम के चरणों में ही दिन-रात ध्यानाकृष्ट रहती हैं। सुन्दरकाण्ड में हनुमान जी व सीता माता का सम्वाद अद्भुत व मनोहर बन पड़ा है। हनुमान जी द्वारा श्रीराम की मार्मिक कथा सुनकर सीता जी के दुख दूर हो जाते हैं।

रामचन्द्र गुन बरनै लागा, सुनतहिं सीता कर दुख भागा।
श्रवनामृत जेहिं कथा सुहाई। कही सो प्रकट होति किन भाई।
फिर बैठी मन विसमय भयऊ।
नर वानरहि संग कहु कैसे।
कपि के वचन सप्रेम सुनि, उपजा मन विश्वास।
जाना मन क्रम वचन यह, कृपासिंधु कर दास॥
अब कहु कुसल जाऊ बलिहारी। अनुज सहित सुख भवन खरारी।
मातु कुसल प्रभु अनुज समेता। तब दुख-दुखी सुकृपा निकेता।
जनि जननी मानहुँ जिय ऊना। तुम्ह ते प्रेम राम कर दूना।

इसके पश्चात् जब हनुमान जी वापिस श्रीराम के समक्ष प्रस्तुत होते हैं तब उनका हर्ष व आनन्द चरम पर रहता है। 'प्रीति सहित सब भेंटे, रघुपति करूनापुंज। पूछी कुशल नाथ अब, कुसल देखि पद कंज।' हनुमान जी गद्गद भाव व्यक्त करते हुए कहते हैं - 'प्रभु की कृपा भयऊ सबु काजू, जन्म हमार सुफल भा आजू।' इस प्रकार धन्यता अनुभव करते हुए हनुमान जी ने अपनी सफलता पर अपार प्रसन्नता व्यक्त की। वास्तव में यदि देखा जाये तो यह सफलता आसान नहीं थी। यह सफलता हर उस व्यक्ति को प्रेरित करती है जो हताश व निराश होकर कुछ करते ही नहीं। मन रूपी वानर जीवन भर जितनी छलांगे लगाता है, यदि वह हनुमान जी की तरह ऊँची छलांग लगा दे तथा अपनी वृत्ति को हनुमान जी जैसी बना ले तो जीवन ही धन्य हो जाये। सुन्दरकाण्ड का वृतान्त भगवान शंकर अत्यन्त शांत मन से बहुत ही श्रेष्ठता के साथ सुनाते हैं, इसलिए भी सुन्दरकाण्ड सुन्दरता से ओत-प्रोत हो गया है, 'सावधान मन करि पुनि शंकर, लागे कहन कथा अति सुन्दर।'

लंका जैसे भीषण वातावरण को सुन्दर बनाने में श्री सीताजी की महती भूमिका है। उनका त्याग व पतिव्रता स्वरूप समस्त नारीजगत के लिए स्पृहणीय व स्तुत्य है।

रामचरित मानस के सन्देश की विश्वजनीनता

प्रभुदयाल मिश्र

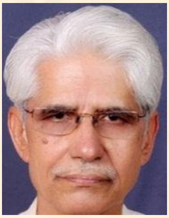

योग, वेद और वेदान्त के अध्येता श्री प्रभुदयाल मिश्र, सागर विश्वविद्यालय से अंग्रेज़ी में परास्नातक हैं। उन्होंने अध्यात्म और दर्शन की आधार भूमिका में दो दर्जन से भी अधिक कविता, उपन्यास, समालोचना, अनुवाद और विनिबन्ध ग्रन्थों की रचना की है। इनमें 'वेद की कविता', 'मैत्रेयी' और 'ईश्वर का घर है संसार' बहुत चर्चित हुई हैं। उच्च प्रशासनिक सेवाओं से निवृत्त श्री मिश्र वर्तमान में भोपाल, मध्य प्रदेश में रह रहे हैं तथा वेदों के शोध और सम्प्रसार में लगे महर्षि अगस्त्य वैदिक संस्थानम् के संस्थापक अध्यक्ष हैं।

ईशावास्य का पहला मंत्र है –

ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्॥

इस मंत्र के प्रथम भाग में ईश्वर की सर्वव्यापकता की उद्घोषणा है। संसार का प्रत्येक चेतन-अचेतन जीव अथवा पदार्थ ईश्वर से आच्छादित, आवेष्ठित है। यह दृष्टि संसार में भेद के स्थान पर सम्पूर्ण अभेदता की पोषक है। इसे गीता में कृष्ण ने यह कहते हुए और अधिक स्पष्ट किया है कि 'मुझ एक धागे में सम्पूर्ण संसार मणि रूप में' (मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव 7.7) पिरोया हुआ है। गोस्वामी तुलसीदास ने इस सूत्र को मानस के वंदना प्रसंग में सभी को, सज्जन और असज्जन सहित, पूरी तरह से प्रणाम करते हुए स्वीकार किया है-

सीय राममय सब जग जानी। करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी॥ (मानस, 1.8.C2)

सनातन भारतीय दर्शन ईश्वर को दूरदेशीय नहीं मानता। वह सृष्टि का कारण और निमित्त दोनों तो है ही, सदा कार्य रूप में भी विद्यमान है। वह कुम्हार ही नहीं, घड़ा बन जाने वाली मिट्टी और स्वयं घड़ा भी है। ऐसे ईश्वर की खोज में किसी को भी कहीं भटकने की आवश्यकता नहीं है। अन्यथा एक ईश्वर की खोज तो सदा अपूर्ण ही रही है और अपूर्ण ही रहने वाली है।

ईश्वर की पहचान में ईश्वर के निर्गुण और सगुण रूप की दो धाराएं सर्व व्यापक हैं। इनके अनुयायी इनमें परस्पर इतनी दूरी भी उत्पन्न करते रहे हैं कि इनका एक व्यवहारिक समन्वय प्रायः सुगम प्रतीत नहीं रहा। यह मानना स्वाभाविक ही है कि ईश्वर अपनी अव्यक्त अवस्था में सर्वशक्तिमान हो सकता है। अतः यदि वह अवतार भी लेता है तो एक सीमा ही स्वीकार करता है तथा इस प्रकार उसका आचरण और कृत्य प्रायः मनुष्यों के ही समान हो जाते हैं जो कभी-कभी आदर्श होकर समालोच्य भी होते हैं।

भारतीय द्रष्टा ऋषियों ने इस सत्य को निकट से पहचाना है। राम और कृष्ण के पूर्ण अवतार का निदर्शन कराने वाले वाल्मीकि और व्यास अपनी रामायण और भागवत में इन दार्शनिक प्रश्नों का समाधान खोजते हैं। श्रीमद्भागवत के पहले ही श्लोक में भगवान वेदव्यास उस 'परम सत्य' (सर्वशक्तिमान अव्यक्त ईश्वर द्वारा सृष्टि संरचना प्रक्रिया का उपक्रम) के सगुण अनुसंधान (सत्यं परम धीमहि) का प्रतिज्ञा कथन करते हैं – जिससे इस संसार की सृष्टि, स्थिति

और प्रलय है, जिसके सम्बन्ध में विद्वान् दिग्भ्रमित होते हैं किन्तु वह स्वयं ज्ञान से प्रकाशित रहता है। श्रीकृष्ण के ब्रज में विहार, मथुरा में युद्ध, द्वारिका में विवाह और कुरुक्षेत्र में युद्ध दीक्षा के चरित्र की वेदान्त की जिस भूमिका में व्यासजी प्रतिष्ठा करते हैं ठीक वही स्थापना गोस्वामी तुलसीदास की भी रामकथा की प्रतिष्ठित में है-

यन्मायावशवर्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवासुरा, यत्सत्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः।
यत्पादप्लवमेकमेव हि भवाम्भोधेस्तीर्षावताम्, वंदेऽहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिम् ॥
(मानस, 1.1.श्लोक 6)

यहाँ इतना कहना पर्याप्त है कि रामचरित मानस की संरचना के दार्शनिक पक्ष की निष्पत्ति में तुलसी वेदव्यास के श्रीमद्भागवत के अधिक निकट हैं जबकि महाकाव्य के विधान रूप में इसमें उन्होंने वाल्मीकि की रामायण से प्रेरणा ली है। और चूंकि दर्शन की यह सनातन परम्परा वेदान्त परक है अतः इसमें ईशावास्य के आधार दर्शन का समावेश प्रचुरता से हुआ है।

हम अब ईशावास्य के पहले मंत्र के दूसरे भाग पर आते हैं। इसमें कहा गया है कि 'सभी वस्तुओं को परमात्मा को अर्पित करने के बाद ही उनका उपभोग उचित है। लोभ कदापि वांछनीय नहीं। भला, यह धन यहाँ किसका है!' इस सूत्र में मनुष्य के लिए आवश्यक यज्ञ, त्याग, अपरिग्रह, समर्पण, निष्कामता, निर्लोभ, समता, निर्भेदता और समभाव आदि सभी वांछनीय गुण समाविष्ट हैं। गीता में श्री कृष्ण ने ऐसे एक कर्मयोगी राजा जनक का उदाहरण दिया जिन्हें संसिद्धि प्राप्त हुई। जब हम मानस के कथानक पर दृष्टिपात करते हैं तो इसमें एक चरित्र राजा प्रतापभानु ऐसा है जिसके बारे में तुलसी ने लिखा-

हृदयँ न कछु फल अनुसंधाना। भूप बिबेकी परम सुजाना॥ (मानस 1.156.C1)
करइ जे धरम करम मन बानी। बासुदेव अर्पित नृप ज्ञानी॥ (मानस 1.156.C2)

यह अपने आप में कितना बड़ा आश्चर्य नहीं है कि इस 'कर्मयोगी' राजा को अन्ततः रावण बनना पड़ता है। इसका क्या कारण है ? इसका उत्तर उपनिषद के इस दूसरे चरण में मिल जाता है। इस राजा ने लोभ का परित्याग नहीं किया. उसमें एक अत्यंत प्रबल आकांक्षा उत्पन्न हो गयी –

जरा मरन दुःख रहित तनु, समर जितै जनि कोउ। (मानस 1.164. D1)
एकछत्र रिपुहीन महि, राज कलप सत होउ॥ (मानस 1.164. D2)

उपनिषद् के लोभ परित्याग के सन्देश का इससे महत्तर विस्तार अन्यत्र देखा जाना कठिन है।

त्याग की इतनी महत्ता प्रतिपादित कर ईशावास्य के दूसरे मंत्र का सन्देश यही कि वास्तव में यह दर्शन 'कर्म' का है, त्याग का नहीं। सही कर्म की इससे भिन्न स्थिति नहीं है। मनुष्य को अपनी सम्पूर्ण १०० वर्ष की इच्छित आयु इसी रीति से व्यतीत करनी है। इससे भिन्न तो केवल अंध तमस का लोक ही है जहां 'आत्म-घाती' लोग पहुंचा करते हैं!

रामचरित मानस में जैसे विभीषण और रावण के व्यक्तित्व इन दो धाराओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, विभीषण को भगवान अंत में यही आदेश देते है- 'करेहु कल्प भरि राजु तुम्ह मोहि सुमिरेहु मन माहिं' (मानस, 6.116d.D1) जब कि रावण की जीवन शैली का निदर्शन वे इन

शब्दों में करते हैं- ‘कहुं महिष मानुस धेनु खर अज खल निशाचर भक्षहीं’ (मानस, 5.3.X21)।

ईशावास्य के ४ से लेकर ८ तक के पांच मंत्र ईश्वर की ‘निखिल धर्म विरुद्ध आश्रयी’ विशेषताओं का निरूपण करते हैं । इसके अनुसार ईश्वर देवताओं और मन से भी तीव्रतर गतिशील, भीतर और बाहर समान रूप से समुपस्थित, अकाय, शुद्ध, कवि, मनीषी, परिभू और स्वयम्भू है । उसे इस रूप में देखने वाले मैं और तू जैसा भेद नहीं रखते । अतः उनके लिए जीवन में किसी प्रकार का शोक या मोह उत्पन्न नहीं होता । मानस में तुलसी ने ईश्वर की इन विशेषताओं का अनेकशः वर्णन किया है. वह – ‘बिनु पद चलइ सुनइ बिनु काना, कर बिनु करम करइ विधि नाना’ (मानस, 1.118.C5) है तथा उसे इस रूप में देखने वाले यही जानते हैं कि – मैं सेवक सचराचर रूप स्वामि भगवंत (मानस, 4.3.D2) ।

ईशावास्य में आगे विद्या और अविद्या तथा सम्भूति और असम्भूति की त्रयी बहुत गहन अध्यात्म दर्शन का निदर्शन करती हैं । वेद के ऋषि का इसमें यह कथन है कि अविद्या के उपासक अंध तमस में प्रवेश करते हैं किन्तु विद्या में रत कहीं अधिक गहरे तमस में भटक जाते हैं । इसी तरह असम्भूति के उपासक भी जहां अंध तम में रहते हैं वहीं संभूति में रत और गहरे अन्धकार में भटकते हैं । अतः ऋषि का परामर्श यहाँ यह है कि इन दोनों स्थितियों की जब व्यक्ति को ठीक समझ हो जाती है तो वह अविद्या/असम्भूति से मृत्यु पर विजय प्राप्त कर विद्या/सम्भूति के द्वारा अमृतत्व में प्रतिष्ठित होता है ।

वैदिक दर्शन के व्याख्याकारों ने इन सिद्धांतों की विस्तृत और गहन व्याख्या की है । सामान्यतया इन्हें भौतिक और अध्यात्म तथा व्यक्त और अव्यक्त धाराओं का प्रतीकार्थी कहा जा सकता है । तुलसी ने भी सृष्टि संरचना में प्रधान ईश्वरीय सामर्थ्य ‘माया’ को ‘बिद्या अपर अबिद्या दोऊ’ (मानस, 3.15.C4) भेद वाला माना है । संक्षेपतः यहाँ यह कहना भी आवश्यक है कि उपनिषद् में ‘विद्या’ और ‘सम्भूति’ के लिए ‘रत’ विशेषण प्रयुक्त है । इसका अर्थ यह हुआ कि ज्ञान के प्रति आसक्ति होने पर वह भी बंधनकारी ही होता है । तुलसीदास जी जैसे सार रूप में समझा देते हैं-

ज्ञान मान जहँ एकउ नाहीं । देख ब्रह्म समान जग माहीं ।। (मानस, 3.15.C7)

औपनिषदिक शब्दावली में ही तुलसी ‘ज्ञान पथ’ की तुलना कृपाण की धार (मानस, 7.119.C1) से करते हैं. अर्थात ज्ञान के मार्ग में भटकने के पूरे अवसर हैं । किन्तु जब ईश्वर की सर्वव्यापकता किसी की अनुभूति बन जाती है तो यहीं मृत्यु से संतरण के बाद उसकी अमृत में प्रतिष्ठा होती है ।

संक्षिप्त रामचरितमानस-१००८ पंक्तियों में

डॉ. ओमप्रकाश गुप्ता

गोस्वामी तुलसीदास रचित गीता प्रेस प्रकाशित श्री रामचरितमानस में 12,587 पंक्तियाँ हैं। आज हमारा जीवन कितना अस्त-व्यस्त है, यह सोच कर मानस का एक संक्षिप्त रूप १००८ पंक्तियों में प्रकाशित होने जा रहा है। पुस्तक में मानस की १००८ पंक्तियों के साथ-साथ उनका सरल हिंदी में भावार्थ, अंग्रेजी में लिप्यन्तरण और सरल अंग्रेजी में अनुवाद भी है। पुस्तक की कुछ प्रारंभिक पंक्तियाँ यहाँ प्रस्तुत हैं। पुस्तक प्राप्त करने और अधिक जानकारी के लिए jigyasa@ramacharit.org को पत्र लिखें।

बालकाण्ड

1. जो सुमिरत सिधि होइ गन नायक करिबर बदन। 1.0a.S1
2. करउ अनुग्रह सोइ बुद्धि रासि सुभ गुन सदन॥ 1.0a.S2

जिनको स्मरण करने से सारे कार्य सफल होते हैं, जो गणों के नायक और सुन्दर हाथी के मुखवाले हैं, ऐसे बुद्धि के भण्डार और शुभ गुणों के धाम श्री गणेश जी महाराज मुझ पर कृपा करें।

3. मूक होइ बाचाल पंगु चढइ गिरिबर गहन। 1.0b.S1
4. जासु कृपाँ सो दयाल द्रवउ सकल कलि मल दहन॥ 1.0b.S2

जिनकी कृपा से गूँगा बोलने लगता है, लँगड़ा दुर्गम पर्वत पर चढ़ जाता है, वे कलियुग के सब पापों को जला डालनेवाले दयालु भगवान मुझ पर दया करें।

5. नील सरोरुह स्याम तरुन अरुन बारिज नयन। 1.0c.S1
6. करउ सो मम उर धाम सदा छीरसागर सयन॥ 1.0c.S2

जो नीले कमल के समान श्याम हैं, जिनके पूर्ण खिले हुए लाल कमल जैसे नेत्र हैं, जो सदा क्षीरसागर में शयन करते हैं, वे परमपिता श्री नारायण मेरे हृदय में निवास करें।

7. कुंद इंदु सम देह उमा रमन करुना अयन। 1.0d.S1
8. जाहि दीन पर नेह करउ कृपा मर्दन मयन॥ 1.0d.S2

जिनका कुंद के पुष्प और चन्द्रमा के समान गोरा शरीर है, जो पार्वती जी के प्रियतम और दया के धाम हैं, जिनका दीनों पर स्नेह है, वे कामदेव का मर्दन करनेवाले श्री शंकर भगवान मुझ पर कृपा करें।

Indian Vegetarian Restaurant in Ahmedabad!

HONEST®

201, 2nd Floor, Circle P Complex,
Near Auda Garden, Prahladnagar,
Ahmedabad - 380015
M : 9898622256

IIIM Technical Campus

INTERNATIONAL SCHOOL OF INFORMATICS & MANAGEMENT

(Formerly India International Institute of Management)

Accredited 'A' by NAAC

Ranked I[st] in category 'A' by Rajasthan Technical University, Kota

MBA
MCA

Approved by AICTE, New Delhi
Affiliated to RTU, Kota

Ranked among top 50 Business Schools in the country by the Business World Survey 2013, CSR-GHRDC Survey from 2008 to 2016 and Higher Education Review 2015. Also ranked among top 150 Business Schools by Business Today Survey, 2016

Eligibility / Selection Procedure

Bachelor's degree with at least 50% marks or equivalent CGPA in any discipline from a recognized University.

MAT/ CAT/ XAT/ ATMA/ CMAT score, GD & Personal Interview.

Forms can be downloaded from www.icfia.org

Also recognized as a Research Centre by RTU, Kota for offering

Ph.D.

in Management & Computer Applications

Grooming Business Leaders for Tomorrow

The programme aims to prepare students for managerial and entrepreneurial careers across functional areas of Marketing, Finance, Human Resource Management, International Business, Information Technology and Production & Operation Management.

Ph: 0141-2781154/55,
Email : iiim@icfia.org
Web: www.icfia.org

Sector - 12, Mahaveer Marg
Mansarovar, Jaipur - 302020